Lucknow IAS Academy

LiA

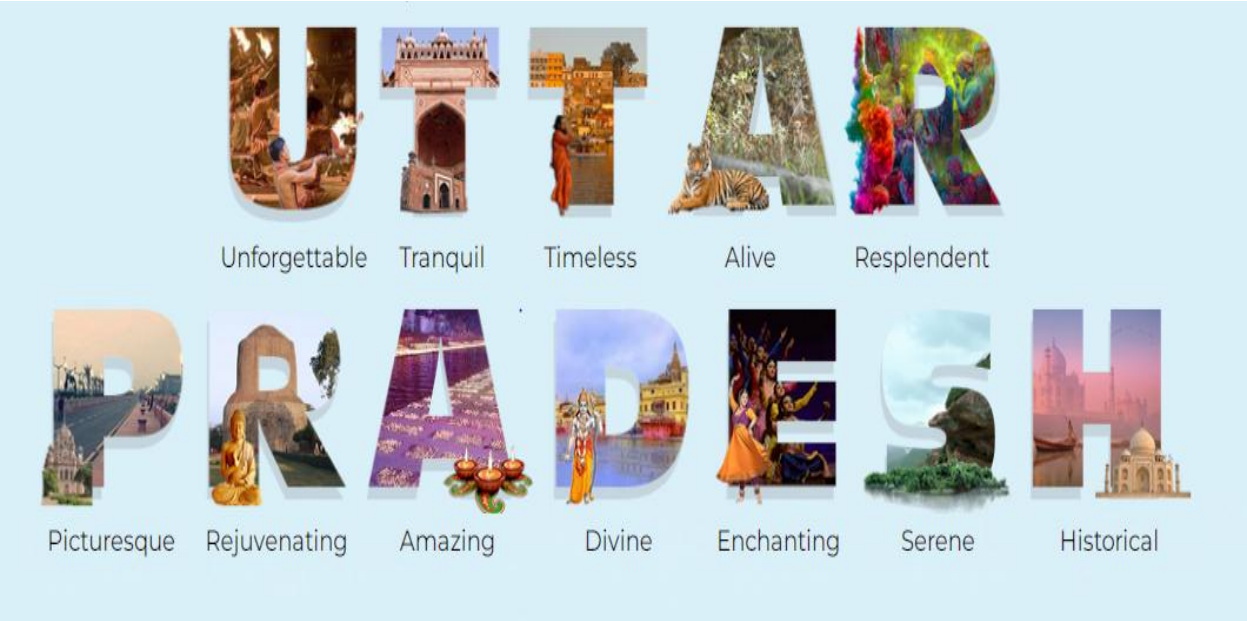

UP Special

General Studies Paper V

1: उत्तर प्रदेश में वन

वनों एवं वृक्षों से ही भूमि संरक्षण, जल संरक्षण तथा पर्यावरण सुरक्षा सुनिश्चित होती है। दुर्लभ वन्य जीवन प्रजातियों के लिए वन ही उनके प्राकृतिक वास है। प्रदेश के राजस्व में भी वनों का योगदान है। इमारती लकड़ी, जलौनी लकड़ी तथा कुछ अन्य मदों से भी राजस्व प्राप्त होता है। कत्था, तेंदू पत्ता, चिरौंजी, बाँस, मूंज, चारे की घास, औषधियों, जड़ीबूटियों-, शहद, मोम आदि से भी प्रदेश सरकार को राजस्व मिलता है। साल, चीड़, देवदार और शीशम के पेड़ों से निर्माण कार्य के लिए लकड़ी और रेलवे के स्लीपर बनते हैं। चीड़ के पेड़ों से निकले द्रव से रेसिन और तारपीन बनाया जाता है। सेमल का उपयोग माचिस बनाने में किया जाता है। बबूल से अनेक प्रकार के रंग, बांस से पेपर उद्योग और तेंदू से बीड़ी बनायी जाती है। बेंत का उपयोग टोकरी और फर्नीचर बनाने में किया जाता है। प्रदेश में तीन प्रकार के वन पए जाते हैं-

- **उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन**
- **उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन**
- **उष्णकटिबंधीय कंटीले वन**

उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन

आर्द्र पर्णपाती वन तराई के नमी वाले क्षेत्रों में पाये जाते हैं। इस क्षेत्र में 100-150 सेमीतक वर्षा होती . है। यहाँ ऊँचे भागों में जहाँ अनिश्चित आकारों वाले पर्णपाती वृक्ष पाए जाते हैं, वहीं निचले क्षेत्रों में बांस, लताओं और बेंत के साथ हरीजाती हैं। इन वनों में साल भरी झाड़ियाँ पाई-, बेर, गूलर, महुआ, पलास, सेमल, ढाक, आंवला, जामुन आदि के वृक्ष पाए जाते हैं।

उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन- शुष्क पर्णपाती वन प्रदेश के सभी मैदानी भागों आमतौर पर मध्यपूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों में होते हैं। इन क्षेत्रों में प्रकाश नीचे तक पहुँचता है, अतः यहाँ घासों और झाड़ियों की उपज भी अच्छी होती है। ऐसे वनों के बहुत बड़े क्षेत्र की खेती के लिए सफाई कर दी गई है। इन वनों में साल, पलास, अंजीर, सागौर प्रमुख हैं। नदियों के आसपास या नमी वाले स्थानों पर नीम, पीपल, आम, जामुन, बबूल आदि पाये जाते हैं।

उष्णकटिबंधीय कंटीले वन-

कंटीले वन ज्यादातर दक्षिणीपश्चिमी भागों में पाये जाते हैं। इन क्-षेत्रों में वर्षा बहुत कम होती है। इन क्षेत्रों में दूरदूर तक कंटीले बौने वृक्ष मुख्यतः बबूल-, फलदार पौधे, सांहुड़ की पैदावार होती है। वर्षा ऋतु में यहाँ छोटीछोटी घास उग आती है। यहाँ खैर-, फुलाई, नीम, धामन आदि वृक्ष पाये जाते हैं। प्रदेश के ज्यादातर वन तराईभाभर क्षेत्र में पाए जाते हैं। विंध्य क्षेत्र के वनों में अधिकतर झाड़ियाँ हैं। यहाँ - चिरौंजी, ढाक, सागौर, महुआ और तेंदू के जंगल पाए जाते हैं। पहाड़ी क्षेत्र के जंगलों में औषधीय पौधे पाए जाते हैं।

वनावरण की वृद्धि हेतु हो रहे सरकारी प्रयासः

प्रदेश की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए यह आवश्यक है कि प्रदेश में उपलब्ध वनों का वैज्ञानिक पद्धति से सघन प्रबंध किया जाए। वनों से भूमि संरक्षण तथा जल संरक्षण के साथ-साथ मानव जीवन हेतु शुद्ध पर्यावरण की उपलब्धता सुनिश्चित होती है। भारत वन स्थिति रिपोर्ट2017 के अनुसार प्रदेश में कुल वनावरण एवं वृक्षावरण राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 9.18 प्रतिशत है जो उ०प्र० वन नीति 1998 के लक्ष्य)33 प्रतिशतत कम है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए से बहु (प्रदेश सरकार राज्य के वनावरण एवं वृक्षावरण में वृद्धि करने केलिए निम्नलिखित प्रयास कर रही है-

- जनमानस को वनों के महत्व के प्रति सचेत करने के लिए 1952 से प्रदेश में हर साल जुलाई महीने में वन महोत्सव मनाया जाता है।
- प्रदेश के समस्त जनपदों के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रकाष्ठ, ईंधन तथा चारापत्ती एवं लघु वनोपज की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए 1979-80 में सामाजिक वानिकी योजना शुरू की गई है। यह समाज द्वारा समाज के लिए समाज की भूमि पर वनीकरण की एक योजना है। इस योजना के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की भूमियों जैसे सामुदायिक भूमि नहर, रेल तथा सड़क के किनारे उपलब्ध भूमि पर वृक्षारोपण कराया जा रहा है। ख वर्ष 2001 में आपरेशन ग्रीन योजना के माध्यम से जनसामान्य, विभिन्न सरकारी विभागों, विद्यालयों तथा निजी साधनों के सहयोग से वृक्षारोपण कार्य कराया गया।
- संस्थाओं द्वारा वृक्षारोपण को प्रोत्साहन देने के लिए वर्ष 2007-08 वृक्षबंधु पुरस्कार दिये जाने की घोषणा की गई।

- प्रदेश के वन क्षेत्रफल में वृद्धि करने के लिए प्रदेश सरकार ने वर्ष 2015 में एक दिन में 10 लाख पौधरोपण का तथा वर्ष 2017 में एक दिन में 5 करोड़ पौधरोपण का विश्व रिकार्ड बनाया। यह वनीय वृद्धि हेतु प्रदेश सरकार का सराहनीय कदम था।
- प्रदेश के वनीय क्षेत्रफल में वृद्धि करने तथा न्यूनतम वन क्षेत्र के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जरूरी है कि सरकार अपनी योजनाओं के माध्यम से स्वयं वनावरण कार्यक्रम चलाये साथ ही प्रदेश की जनता को भी वनारोपण हेतु प्रोत्साहित करे।
- अवनत वन तथा खुले वन क्षेत्रों में वनावरण संवर्द्धन के उद्देश्य से प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश के 18 जनपदों में वनावरण संवर्द्धन योजना चलाई जा रही है। प्रदेश के पर्यावरण सुधार हेतु हरित पट्टी विकास योजना क्रियान्वित की जा रही है। वहीं प्रदेश के मैनपुरी, आगरा, मथुरा, फिरोजाबाद आदि को पूर्ण रूप से हरा भरा करने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा टोटल फारेस्ट कवर योजना चलाई जा रही है।

उत्तर प्रदेश में वनों से संबंधित महत्वपूर्ण कार्यक्रम देश में वनों कोयोजनाएं उत्तर प्र /1935 में राजकीय संपत्ति घोषित किया गया। उत्तर प्रदेश, वन महोत्सव का आरंभ जुलाई, 1952 से हुआ। वन महोत्सव आंदोलन का मूलाधार है श्वृक्ष का अर्थ जल है, जल का अर्थ रोटी है और रोटी ही जीवन है। वन अनुसंधानशाला देहरादून र प्रदेश के वन सेवा के अधिकारियों एवं में स्थित है। उत्त (उत्तराखंड) कर्मचारियों की प्रशिक्षण भारतीय वन महाविद्यालय, देहरादून में दिया जाता है। वनों की उत्पादकता में वृद्धि करने हेतु वर्ष 1970 में कानपुर में राज्य वन अनुसंधान प्रयोगशाला स्थापित किया गया, जिसे वर्ष 1993 में राज्य वन अनुसंधान संस्थापन के रूप में उच्चीकृत किया गया। राष्ट्रीय कृषि आयोग की पहल पर 1979 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सामाजिक वानिकी योजना का शुभारंभ किया गया। तेंदू पत्ता संग्रहण तथा निस्तारण इसे वर्ष 1983 से राज्य वन निगम के द्वारा अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोगों द्वारा एक तय पारिश्रमिक पर कराया जाता था, किन्तु नवम्बर 2010 से राज्य सरकार ने अब तेंदू पत्ते से प्राप्त शुद्ध आय का 50% मजदूरों को देने का निर्णय लिया। राज्य में प्रमुख रूप से तेंदूपत्ता मिर्जापुर, सोनभद्र, वाराणसी, महाराजगंज, प्रयागराज, बाँदा, हमीरपुर, झाँसी तथा ललितपुर आदि जिलों में मिलता है। उत्तर प्रदेश में वन प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना वर्ष 1988 में कानपुर में हुई थी । उत्तर प्रदेश में संयुक्त वन प्रबंधन)Joint Forest Management) 1992 में प्रारंभ हुआ था। झ सोनभद्र के वेलहत्थी ग्राम को प्रदेश का पहला ग्राम वन घोषित किया गया है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 7 नवंबर, 2015 को **'ग्रीन यू.पी.क्लीन यू .पी.'** अभियान की शुरूआत की गई थी। जड़ी -बूटी एकत्रीकरण कार्यक्रम- प्रदेश के राज्य वन निगम द्वारा अनुसूचित जाति एवं जनजाति)SC, ST) द्वारा एक निश्चित पारिश्रमिक पर लोगों द्वारा कराया जाता है। इस कार्यक्रम से उत्तर प्रदेश में 5000 परिवारों को रोजगार प्राप्त हुआ है। राज्य में मुख्य जड़ीबूटियों का संग्रहण ललितपुर-, झाँसी, महोबा, चित्रकूट, सोनभद्र, मिर्जापुर तथा चंदौली आदि जनपदों में किया जाता है।

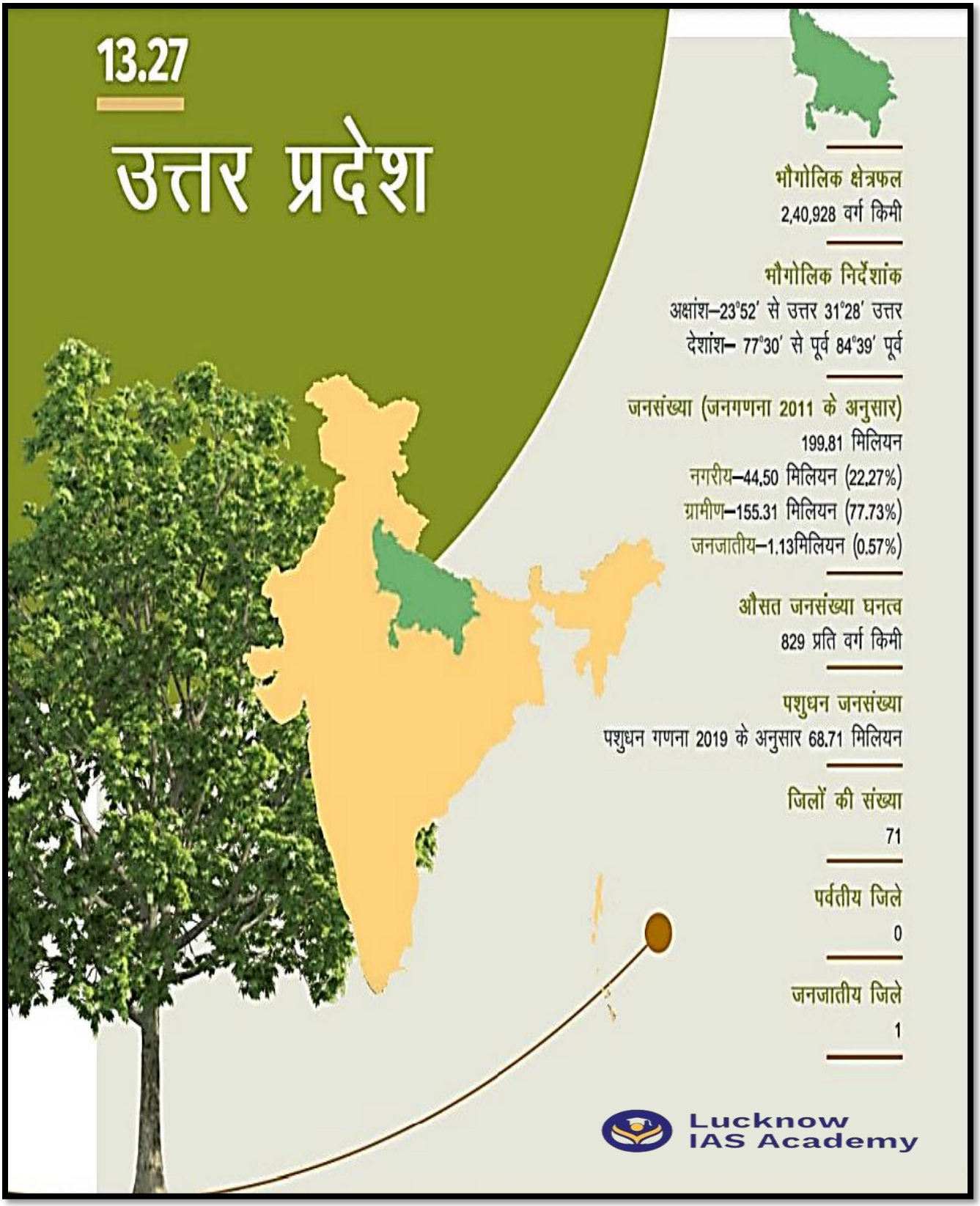
13.27
उत्तर प्रदेश
भौगोलिक क्षेत्रफल
2,40,928 वर्ग किमी
भौगोलिक निर्देशांक
अक्षांश–23°52′ से उत्तर 31°28′ उत्तर
देशांश– 77°30′ से पूर्व 84°39′ पूर्व
जनसंख्या (जनगणना 2011 के अनुसार)
199.81 मिलियन
नगरीय–44.50 मिलियन (22.27%)
ग्रामीण–155.31 मिलियन (77.73%)
जनजातीय–1.13मिलियन (0.57%)
औसत जनसंख्या घनत्व
829 प्रति वर्ग किमी
पशुधन जनसंख्या
पशुधन गणना 2019 के अनुसार 68.71 मिलियन
जिलों की संख्या
71
पर्वतीय जिले
0
जनजातीय जिले
1
Lucknow
IAS Academy

तालिका 13.27.1 भूमि उपयोग प्रतिमान

भूमि उपयोग प्रकार	क्षेत्रफल (000' हे में)	प्रतिशत
भौगोलिक क्षेत्रफल	24,093	
भूमि उपयोग के लिए प्रस्तुत क्षेत्र	24,170	100.00
वन	1,671	6.91
भू–संवर्धन के लिए अनुपलब्ध	3,607	14.92
नियमित चरागाह एवं अन्य चराई भूमियों	66	0.27
विविध वृक्ष उपज एवं उपवनों के अधीन भूमि	283	1.17
संवर्धनीय बंजर भूमि	389	1.61
वर्तमान परती भूमियाँ	551	2.28
अतिरिक्त परती भूमियाँ	1,061	4.39
शुद्ध रोपण क्षेत्र	16,542	68.45

स्रोतः भूमि उपयोग सांख्यिकी, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार (2017–18)

13.27.1 वनावरण

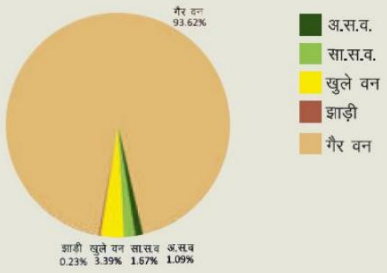

चित्र 13.27.1
उत्तर–प्रदेश का वनावरण

तालिका 13.27.2
उत्तर–प्रदेश का वनावरण (वर्ग किमी में)

श्रेणी	क्षेत्रफल	भौ.क्षे.का %
अ.स.व.	2,626.61	1.09
सा.स.व.	4,029.37	1.67
खु.व.	8,161.91	3.39
कुल	**14,817.89**	**6.15**
झाड़ी	563.38	0.23

Lucknow IAS Academy

तालिका 13.27.3 उत्तर-प्रदेश में जिलावार वनावरण (वर्ग किमी में)

जिला	भौगोलिक क्षेत्रफल	2021 आकलन				भौ क्षे का %	2019 आकलन की तुलना में परिवर्तन	झाड़ी
		अत्यंत सघन वन	सामान्य सघन वन	खुले वन	कुल			
आगरा	4,041	0.00	62.68	199.94	262.62	6.50	0.00	75.14
अलीगढ़	3,650	0.00	7.00	59.75	66.75	1.83	0.00	1.00
अम्बेडकर नगर	2,350	0.00	1.00	40.16	41.16	1.75	0.04	0.08
अमरोहा	2,249	0.00	25.00	61.00	86.00	3.82	0.00	0.00
औरैया	2,016	0.00	4.96	36.42	41.38	2.05	0.00	10.09
अयोध्या	2,341	6.00	9.99	73.43	89.42	3.82	0.12	0.96
आजमगढ़	4,054	0.00	1.03	48.28	49.31	1.22	-0.69	0.00
बागपत	1,321	0.00	5.00	12.06	17.06	1.29	0.00	0.00
बहराइच	5,237	240.00	156.41	159.70	556.11	10.62	6.01	6.99
बलिया	2,981	0.00	0.00	22.15	22.15	0.74	0.00	0.00
बलरामपुर	3,349	278.00	156.01	103.40	537.41	16.05	11.40	3.04
बांदा	4,408	0.00	55.91	46.00	101.91	2.31	0.00	4.00
बाराबंकी	4,402	3.00	6.14	90.29	99.43	2.26	16.36	4.33
बरेली	4,120	0.00	7.00	38.00	45.00	1.09	0.00	0.00
बस्ती	2,688	1.00	5.93	24.65	31.58	1.17	2.33	0.03
भदोही	1,015	0.00	0.00	3.71	3.71	0.37	0.59	0.00
बिजनौर	4,561	37.99	216.63	144.28	398.90	8.75	-4.71	5.52
बदायूँ	5,168	0.00	8.13	23.91	32.04	0.62	0.00	6.00
बुलंदशहर	4,512	0.00	49.72	115.40	165.12	3.66	0.00	0.00
चंदौली	2,541	7.91	183.97	361.60	553.48	21.78	-11.78	2.50
चित्रकूट	3,216	81.30	319.19	231.20	631.69	19.64	45.29	29.84
देवरिया	2,540	0.00	1.00	14.21	15.21	0.60	0.00	0.00
एटा	2,431	0.00	0.98	25.20	26.18	1.08	0.00	0.26
इटावा	2,311	0.00	62.75	188.63	251.38	10.88	0.00	45.05
फर्रुखाबाद	2,181	0.00	14.00	33.45	47.45	2.18	0.00	2.00
फतेहपुर	4,152	0.00	18.00	35.44	53.44	1.29	0.00	0.00
फिरोजाबाद	2,407	0.00	5.00	53.60	58.60	2.43	0.00	26.49
गौतम बुद्ध नगर	1,282	0.00	5.00	15.00	20.00	1.56	0.00	0.00
गाजियाबाद	1,179	0.00	8.67	16.55	25.22	2.14	0.00	0.00
गाजीपुर	3,377	0.00	1.00	28.00	29.00	0.86	0.00	0.00
गोंडा	4,003	66.64	8.92	46.28	121.84	3.04	6.98	0.23
गोरखपुर	3,321	27.86	23.10	28.10	79.06	2.38	0.06	0.00
हमीरपुर	4,021	0.00	80.00	147.00	227.00	5.65	0.00	14.00
हरदोई	5,986	0.00	16.98	129.80	146.78	2.45	2.93	5.27
हाथरस	1,840	0.00	1.00	22.00	23.00	1.25	0.00	0.00
जलौन	4,565	0.00	60.58	186.73	247.31	5.42	0.00	37.97
जौनपुर	4,038	0.00	10.79	58.64	69.43	1.72	2.41	0.16
झाँसी	5,024	0.00	42.00	262.05	304.05	6.05	0.00	41.96
कन्नौज	2,093	0.00	0.00	27.82	27.82	1.33	0.00	0.00
कानपुर देहात	3,021	0.00	3.00	38.00	41.00	1.36	0.00	9.00
कानपुर नगर	3,155	0.00	7.00	59.00	66.00	2.09	0.00	3.00
कासगंज	1,955	0.00	7.67	41.13	48.80	2.50	0.00	0.00
कौशाम्बी	1,779	0.00	5.00	22.83	27.83	1.56	0.00	0.00
खीरी	7,680	804.91	158.21	309.44	1,272.56	16.57	-0.50	4.39
कुशीनगर	2,905	0.00	2.62	32.78	35.40	1.22	0.56	0.00
ललितपुर	5,039	0.00	128.89	452.40	581.29	11.54	0.00	33.18
लखनऊ	2,528	0.00	162.28	224.92	387.20	15.32	8.33	1.13
महोबा	3,144	0.00	21.00	149.00	170.00	5.41	0.00	62.00
महाराजगंज	2,952	261.09	94.10	72.57	427.76	14.49	-1.31	0.24
मैनपुरी	2,760	0.00	1.00	12.64	13.64	0.49	0.00	0.00
मथुरा	3,340	0.00	4.00	53.04	57.04	1.71	0.00	3.52
मऊ	1,713	0.00	0.00	11.00	11.00	0.64	0.00	0.00
मेरठ	2,559	0.00	34.00	34.41	68.41	2.67	0.00	0.00
मिर्ज़ापुर	4,405	9.20	281.04	455.87	746.11	16.94	-57.62	51.14
मुरादाबाद	3,718	0.00	5.00	23.00	28.00	0.75	0.00	0.00
मुजफ्फर नगर	4,008	0.00	14.00	52.03	66.03	1.65	-0.08	0.00
पीलीभीत	3,686	471.00	86.52	128.21	685.73	18.60	-1.38	2.11
प्रतापगढ़	3,717	0.00	31.22	90.22	121.44	3.27	3.62	1.97
प्रयागराज	5,482	6.16	26.19	123.92	156.27	2.85	27.06	28.32
रायबरेली	4,609	0.00	4.00	89.69	93.69	2.03	0.15	1.32
रामपुर	2,367	4.00	26.00	45.00	75.00	3.17	0.00	0.00
सहारनपुर	3,689	0.00	174.00	319.18	493.18	13.37	49.92	0.38
संत कबीर नगर	1,646	0.00	0.86	13.54	14.40	0.87	0.40	1.00
शाहजहाँपुर	4,388	26.00	7.00	26.31	59.31	1.35	0.00	1.17
श्रावस्ती	1,640	151.23	91.25	42.89	285.37	17.40	0.83	0.00

Lucknow IAS Academy

(वर्ग किमी में)

जिला	भौगोलिक क्षेत्रफल	2021 आकलन				भौ क्षे का %	2019 आकलन की तुलना में परिवर्तन	झाड़ी
		अत्यंत सघन वन	सामान्य सघन वन	खुले वन	कुल			
सिद्धार्थ नगर	2,895	0.00	8.29	35.09	43.38	1.50	9.30	0.10
सीतापुर	5,743	0.00	19.00	190.67	209.67	3.65	0.25	6.30
सोनभद्रा	6,905	138.32	940.62	1,357.81	2,436.75	35.29	-103.54	30.18
सुल्तानपुर	4,436	5.00	15.14	187.99	208.13	4.69	-1.90	0.02
उन्नाव	4,558	0.00	28.00	236.59	264.59	5.80	0.00	0.00
वाराणसी	1,535	0.00	1.00	16.91	17.91	1.17	0.81	0.00
कुलयोग	**2,40,928**	**2,626.61**	**4,029.37**	**8,161.91**	**14,817.89**	**6.15**	**12.24**	**563.38**

13.27.1.1 अभिलिखित वन क्षेत्र (या ग्रीन वाश) के भीतर एवं बाहर वनावरण

अभिलिखित वन क्षेत्र (अ.व.क्षे.) के भीतर एवं बाहर वनावरण को विभिन्न श्रेणियों में विश्लेषित किया गया है। जिसे नीचे तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 13.27.4 उत्तर–प्रदेश में अभिलिखित वन क्षेत्र (या ग्रीन वॉश) के भीतर एवं बाहर वनावरण (वर्ग किमी में)

अभिलिखित वन क्षेत्र (या ग्रीन वॉश) के भीतर वनावरण				अभिलिखित वन क्षेत्र (या ग्रीन वॉश) के बाहरवनावरण			
अ.स.व.	सा.स.व.	खु.व.	कुल	अ.स.व.	सा.स.व.	खु.व.	कुल
2,463	3,002	3,678	9,143	164	1,027	4,484	5,675
26.94%	32.83%	40.23%		2.89%	18.10%	79.01%	

*उत्तर प्रदेश के संदर्भ में अ.व.क्षे. की सीमाओं का प्रयोग किया गया है।

चित्र 13.27.2 उत्तर–प्रदेश में अभिलिखित वन क्षेत्र के भीतर एवं बाहर वनावरण

तालिका 13.27.5 उत्तर–प्रदेश के वनावरण परिवर्तन मैट्रिक्स (वर्ग कि.मी. में)

श्रेणी	आकलन 2021					कुल भा.व.स्थि. रि. 2019
	अ.स.व.	सा.स.व.	खु.व.	झाड़ी	गैर वन	
अत्यंत सघन वन	2,612	3	1	0	1	2,617
सामान्य सघन वन	13	4,011	31	0	25	4,080
खुले वन	1	12	7,853	19	224	8,109
झाड़ी	0	0	31	531	25	587
गैरवन	1	3	246	13	2,25,272	2,25,535
कुल भा. व.स्थि. रि. 2021	**2,627**	**4,029**	**8,162**	**563**	**2,25,547**	
शुद्ध परिवर्तन	10	-51	53	-24	12	

तालिका 13.27.6 उत्तर–प्रदेश का उन्नतांश क्षेत्रावार वनावरण (वर्ग कि.मी. में)

उन्नतांशक्षेत्र (मी)	भौगोलिक क्षेत्रफल	अ.स.व.	सा.स.व.	खु.व.	कुल	झाड़ी
0-500	2,40,458	2,627	3,844	7,955	14,426	562
500-1000	470	0	185	207	392	1
कुल	**2,40,928**	**2,627**	**4,029**	**8,162**	**14,818**	**563**

(एस आर टी एम एलिवेशन मॉडल, 30 मी 2016 पर आधारित)

तालिका 13.27.7 उत्तर–प्रदेश का विभिन्न ढलान श्रेणियों में वनावरण (वर्ग कि.मी. में)

ढलान (डिग्री में)	भौगोलिक क्षेत्रफल	अ.स.व.	सा.स.व.	खु.व.	कुल	झाड़ी
0-5	2,35,259	2,397	3,103	7,136	12,636	482
5-10	4,405	159	492	629	1,280	56
10-15	730	41	216	206	463	15
15-20	300	16	115	104	235	6
20-25	143	9	61	52	122	3
25-30	60	4	28	22	54	1
>30	31	1	14	13	28	0
कुल	**2,40,928**	**2,627**	**4,029**	**8,162**	**14,818**	**563**

(एस आर टी एम एलिवेशन मॉडल, 30 मी 2016 पर आधारित)

2:उत्तर प्रदेश में वन्य जीव एवं वन्य जीव_संरक्षण

विविध स्थलाकृति तथा जलवायु के कारण उत्तर प्रदेश का प्राणि जीवन समृद्ध है। यहाँ के वनों में शेर, तेंदुआ, जंगली भालू, जंगली सूअर, चीतल, हिरन, सांभर, सियार, घड़ियाल, साही, जंगली बिल्ली, खरगोश, लोमड़ी, आदि वन्यजीव पाये जाते हैं। कुछ जीव प्रजातियाँ विशेष क्षेत्रों में ही पाई जाती हैं। जैसे हाथी तराई और पहाड़ी इलाकों में पाए जाते हैं। चिंकारा और हिरन सूखे -क्षेत्रों में तथा भालू और कस्तूरी मृग हिमालयी क्षेत्र में मिलते हैं। प्रदेश में कई उद्यान एवं अभ्यारण्य है जहाँ उत्तरी भारत के अन्य भागों में विलुप्त हो रहे वन्य जीवों को पुनः बसाया गया है। ऐसे जीवों में बंगाल फ्लोरिकन एवं एक सींग वाला गैंडा प्रमुख है। प्रदेश में पक्षी प्राणियों की आबादी इतनी अधिक समृद्ध हैं कि यहाँ कृषि क्षेत्रों, झीलों तथा जलनिकायों के आसपास पक्षियों के झुण्ड देखे जा सकते हैं। प्रदेश में कबूतर-, गौरैया, जंगली बत्तख, चील, तीतर, कोयल, मोर, कठफोड़वा आदि पक्षी भी पाए जाते हैं। नदी और झील के किनारे कई तरह के पक्षी जैसे काली गर्दन वाला सारस, स्टोर्क तथा गिद्ध पाए जाते हैं।

उत्तर प्रदेश के प्रमुख वन्य जीव विहार एवं राष्ट्रीय उद्यान

प्रदेश का सबसे पुराना वन्य जीव विहार चंद्रप्रभा उत्तर प्रदेश के चंदोली जिले में स्थापित है। उत्तर प्रदेश में कुकरैल वन लखनऊ के समीप स्थित है। कुकरैल वन में 1984-85 से लुप्त प्रजातियों हेतु एक प्रजनन केंद्र स्थापित किया गया है। उत्तर प्रदेश में एकमात्र राष्ट्रीय उद्यान दुधवा है जो एक टाइगर रिजर्व भी है। इसका विस्तार लखीमपुर खीरी व बहराइच जिले में है। दुधवा राष्ट्रीय उद्यान का कुल क्षेत्रफल लगभग 490 वर्ग किमी है। 1968 में स्थापित इस विहार को 1977 में राष्ट्रीय पार्क का दर्जा प्रदान किया गया। दुधवा राष्ट्रीय पार्क को वर्ष 1987-88 में टाइगर रिजर्व परियोजना में शामिल किया गया। जिसके तहत यह प्रदेश का प्रथम टाइगर रिजर्व बना। दुधवा राष्ट्रीय पार्क की उत्तरी सीमा मोहन नदी बनाती है, जबकि उसकी दक्षिणी सीमा सुहेली नदी द्वारा निर्धारित होती है।

वन्यजीवों की गणना और संरक्षण के प्रयास

बाघ जनगणना, 2023 तक, उत्तर प्रदेश में 205 बाघ हैं, जो 2018 से 18.49% की वृद्धि है, जब 173 बाघ थे। प्रदेश का दूसरा टाइगर रिजर्व 2012 में जिम कार्बेट के बफर जोन के रूप में अमनगढ़ टाइगर रिजर्व, बिजनौर को घोषित किया गया। प्रदेश का तीसरा टाइगर रिजर्व 9 जून, 2014 में पीलीभीत वन्य जीव अभयारण्य के रूप में घोषित किया गया। पीलीभीत बाघ अभयारण्य, पीलीभीत एवं शाहजहांपुर जिले में विस्तृत है। रानीपुर टाइगर रिजर्व, जिसे रानीपुर वन्यजीव अभयारण्य (आरडब्ल्यूएस) के रूप में भी जाना जाता है, भारत के उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले में स्थित है। 2022 में यह राज्य का चौथा बाघ अभ्यारण्य बन गया। रिज़र्व 529.36 वर्ग किमी में फैला हुआ है, जिसका मुख्य क्षेत्र 230.32 वर्ग किमी और बफर क्षेत्र 299.05 वर्ग किमी है।

प्रोजेक्ट एलीफैंट की शुरूआत 1992 में की गयी जिसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश एलीफैंट रिजर्व की स्थापना 9 सितंबर, 2009 को की गई थी। उत्तर प्रदेश में हाथी तराई एवं शिवालिक के गिरिपदों में पाया जाता है। उत्तर प्रदेश में 2020 की हाथी जनगणना में 352 हाथियों की गिनती हुई, जो 2017 में 232 से अधिक है।

राष्ट्रीय जलजीव घोषित 'गंगा डॉल्फिन' उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर एवं सोनभद्र जिलों में पायी जाती है। इसे स्थानीय भाषा में 'सुइस ' या 'सुसू' कहा जाता है। उत्तर प्रदेश में गंगा डॉल्फिनों की कुल संख्या 1275 है। भारत सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा 70:30 के अनुपात में नेशनल प्लान फार कन्जर्वेशन ऑफ एक्वेटिक ईको सिस्टम वर्ष 2013-14 से क्रियान्वित की जा रही है।

उत्तर प्रदेश में चिड़ियाघर:

चिड़ियाघर का मुख्य उद्देश्य दर्शकों का मनोरंजन करने के साथसाथ आगंतुकों-, वन्यजीव संरक्षण, शिक्षा, अनुसंधान और लुप्तप्राय वन्यजीवों के बीच वन्य जीवन और पर्यावरण के प्रति जागरूकता और रुचि पैदा करना है। जीवों की हानि । साथ ही आम जनता को वन्य जीव संरक्षण एवं पर्यावरण के प्रति जागरूक होकर उनकी भागीदारी एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक करना होगा। उत्तर प्रदेश में चिड़ियाघर प्रबंधन शीर्ष एजेंसी 'केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण' है। **उत्तर प्रदेश में तीन चिड़ियाघर हैं-**

- **नवाब वाजिद अलीशाह प्राणी उद्यान लखनऊ:** इस प्राणि उद्यान की स्थापना 29 नवंबर 1921 को तत्कालीन राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, सर स्पेंसर हार्कोर्ट बटलर द्वारा तत्कालीन प्रिंस ऑफ वेल्स के लखनऊ आगमन के उपलक्ष्य में की गई थी और इसका नाम " प्रिंस ऑफ वेल्स जूलॉजिकल गार्डन" था। इसमें रखा गया29 हेक्टेयर का क्षेत्र शामिल है। वर्ष 2001 में स्थित, इसे सरकार द्वारा

लखनऊ जूलॉजिकल गार्डन का नाम दिया गया था, जिसका नाम बदलकर वर्ष 2015 में नवाब वाजिद अली शाह प्राणि उदय, लखनऊ कर दिया गया था।

- **कानपुर चिड़ियाघरः** यह चिड़ियाघर भारत सरकार द्वारा 1971 में खोला गया इसके निर्माण कार्य में 2 वर्ष लगे और यह आम लोगो के लिए 4 फरवरी 1974 को खोला गया। यहाँ का पहला जानवर उद्बीलाव था जो की चम्बल घाटी से आया था। कानपुर में स्थित मंधना ब्ल)ू वर्ल्डसे पास में है। (यह भारत के सर्वोत्तम चिड़ियाघरों में एक है। यह बड़े चिड़ियाघर उद्यान की श्रेणी में आता है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह भारत का तीसरा सबसे बड़ा चिड़ियाघर है। यहाँ पर लगभग1250 जीवजंतु - जंतुओं-है। कुछ समय पिकनिट के तौर पर बिताने और जीव को देखने के लिए यह चिड़ियाघर एक बेहतरीन जगह है।
- **शहीद अशफाक उल्लाह प्राणी उद्यान:** शहीद अशफाक उल्ला खान प्राणी उद्यान या गोरखपुर प्राणी उद्यान जिसे आमतौर पर गोरखपुर चिड़ियाघर के रूप में जाना जाता है, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में स्थित है। इसका नाम स्वतंत्रता कार्यकर्ता अशफाकुल्ला खान के नाम पर रखा गया है। 121 एकड़ के क्षेत्र के साथ, यह कानपुर प्राणी उद्यान के बाद राज्य का दूसरा सबसे बड़ा चिड़ियाघर है। इसे 27 मार्च 2021 को जनता के लिए खोल दिया गया था। शहीद अशफाक उल्ला खान प्राणी उद्यान गोरखपुर देवरिया बाईपास र -ोड पर स्थित है। यह गोरखपुर रेलवे बस स्टेशन से लगभग/8 किमी और हवाई अड्डे से लगभग 11 किमी दूर है। यह प्राणी उद्यान पूर्वांचल में पहला और उत्तर प्रदेश में तीसरा है। इसके एक किनारे पर ऐतिहासिक रामगढ़ ताल झील स्थित है। जो एक आर्द्र भूमि है। गोरखपुर शहर राप्ती और रोहिन नदियों से घिरा हुआ है। यहाँ पर एशियाई शेर, बाघ, तेंदुआ, गैंडा, जेबरा, दरियाई घोड़ा, भालू की 2 प्रजातियाँ, बंदर की 3 प्रजाति हिरण की 6 प्रजातियों 3 सहित 58 से अधिक प्रजातियों के 387 जंगली जानवरों को रखने की व्यवस्था की गई है तथा लकड़बग्घा, भेड़िया, मछलीघर, तितली पार्क और मगरमच्छ सहित सरीसृप और पक्षियों की विभिन्न प्रजातियां आकर्षण का केंद्र हैं। इसमें संगरोध केंद्र, बचाव केंद्र, एक पोस्टमार्टम हाउस, एक रसोई और फीड स्टोर है। चूंकि पूर्वी उत्तर प्रदेश में गोरखपुर जूलॉजिकल पार्क एकमात्र चिड़ियाघर है, अतः बचाव केंद्रों की स्थापना से पूर्वांचल और उसके आसपास एवं बिहार तथा पड़ोसी देश नेपाल के जंगलों से आबादी वाले क्षेत्र में भटकने वाले जंगली जानवरों को बचाने और उनके तत्काल उपचार के लिए सुविधा उपलब्ध होगी। इस प्रकार मानवपशु टकराव से होने वाली हानि को रोका जा- सकता है। **वन्य प्राणी सुरक्षा सप्ताह प्रत्येक वर्ष 1-7 अक्टूबर के दौरान मनाया जाता है।**

उत्तर प्रदेश सरकार ने पटना पक्षी विहार को अभ्यारण्य घोषित किया है। प्रदेश में पक्षियों के (एटा) प्रति आम जनता में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए प्रतिवर्ष दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह में बर्ड फेस्टिवल का आयोजन किया जाता है। **सबसे छोटा पक्षी विहारएवं सबसे (अलीगढ़) शेखा पक्षी विहार - ।(कन्नौज) लाख बहोशी पक्षी विहार-बड़ा पक्षी विहार** राष्ट्रीय पक्षी मोर के संरक्षण के लिए मथुरा के वृंदावन में मयूर संरक्षण केंद्र स्थापित किया जा रहा है। मगरमच्छ एवं घड़ियालों के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'घड़ियाल प्रजनन एवं पुनर्वास योजना' चलाई जा रही है। लखनऊ एवं कानपुर प्राणी उद्यानों में तितली पार्क का निर्माण किया गया है, क्योंकि वर्तमान में तितलियों की संख्या कम होती जा

रही है।

नाइट सफारी पार्क- यह रात्रि वन्य जीव पार्क ग्रेटर नोएडा में 120 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला है, इसका निर्माण चीन एवं सिंगापुर में स्थापित नाइट सफारी के तर्ज पर किया गया है। यह इस प्रकार का विश्व का चौथा एवं भारत का प्रथम सफारी पार्क है। राष्ट्रीय चम्बल वन जीव विहार के अन्तर्गत इटावा के फिशर वन क्षेत्र में एक लायन सफारी पार्क, एक एलीफैंट सफारी पार्क तथा तेंदुआ, लकड़बग्घा, भालू एवं हिरण सफारी पार्क की स्थापना की गई है। इंग्लैंड के लांगलीट सफारी पार्क)Longleat Safari Park) से अभिप्रेरित होकर उत्तर प्रदेश के जनपद इटावा में बब्बर शेर प्रजनन केंद्र एवं लॉयन सफारी पार्क विकसित किया गया है। उत्तर प्रदेश में चिंकारा विंध्य के जंगलों में पाया जाता है। उत्तर प्रदेश में गैंडा तराई क्षेत्र में पाया जाता है। भूरा रीछ तथा कस्तूरी हिरन उत्तर प्रदेश के हिमालयी क्षेत्रों के समीप पाया जाता है।

प्रदेश में वन्य प्राणी संरक्षण

वन प्राणियों के संरक्षण हेतु भारत में प्रथम प्रयास 1935 ई. में उत्तर प्रदेश के देहरादून (अब उत्तराखण्ड में) में मोतीचूर वन्य जीव विहार (राजाजी राष्ट्रीय उद्यान) की स्थापना की गई। इसके कुछ समय पश्चात् 1936 ई. में एशिया का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान हैली राष्ट्रीय उद्यान (जिम कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान) की स्थापना नैनीताल एवं गढ़वाल में की गई। यह वर्तमान में उत्तराखण्ड राज्य का भाग है। उत्तर प्रदेश में जैव-विविधता संरक्षण तथा राज्य के वन्य प्राणियों एवं उसके प्राकृतिक वास स्थलों के संरक्षण एवं विस्तार हेतु वन्य जीव परिरक्षण संगठन (भारत का प्रथम) की स्थापना 1956 ई. में की गई। देश में वन्य जीवों के संरक्षण की सर्वोच्च संस्था भारतीय वन्य जीव बोर्ड है। भारतीय वन्य जीव बोर्ड का अध्यक्ष प्रधानमंत्री होता है। भारत में वन्य प्राणी (सुरक्षा) अधिनियम वर्ष 1972 में पारित किया गया। 'वन तथा वन्य प्राणी' विषय समवर्ती सूची में वर्ष 1976 में 42वें संविधान संशोधन के द्वारा सम्मिलित किए गए। 1982 ई. में देहरादून में भारतीय वन्य जीव संस्थान की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य वैज्ञानिक ढंग से व्यवसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना है। राज्य जैव विविधता बोर्ड निधि 2007-08 से, जिनका उद्देश्य जैव विविधता के संरक्षण, संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग तथा केंद्र सरकार के साथ इस क्षेत्र में सहयोग करना है। प्रदेश के सम्पूर्ण वन्य क्षेत्र का लगभग एक तिहाई भाग वन्य जीव परिरक्षण संगठन के नियन्त्रण में है। वर्तमान में प्रदेश में 11 पक्षी विहार, 15 वन्य जीव विहार, 1 राष्ट्रीय उद्यान 3 प्राणी उद्यान तथा 4 टाईगर रिजर्व है।

वन्य जीव संरक्षण हेतु कार्यक्रम एवं योजनाः

लुप्तप्राय प्रजातियों का प्रजनन केन्द्र-

इस केन्द्र की स्थापना 1984-85 में प्रदेश के कुकरैल वन (लखनऊ) में की गई है, जिसके अन्तर्गत हिरन, ऊदबिलाव, काकेर आदि लुप्तप्राय वन्य प्राणियों की प्रजनन योजना चलाई जा रही है। कछुआ पुनर्वास योजना- गंगा को निर्मल एवं प्रदूषण मुक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कछुओं के प्रजनन और विकास के लिए गंगा एक्शन प्लान के अन्तर्गत भारत सरकार द्वारा पोषित यह योजना उत्तर प्रदेश में वर्ष 1986-87 से चलायी जा रही है। इस योजना के अन्तर्गत माँसाहारी कछुओं को संरक्षण प्रदान किया जाता है तथा प्रत्येक वर्ष चंबल, मैनपुरी इत्यादि जनपदों से सारनाथ स्थित कछुआ पुनर्वास केन्द्र में कछुए के अंडे लाए जाते हैं और इनके बच्चों को सुरक्षित गंगा नदी में छोड़ दिया जाता है।

राष्ट्रीय चंबल वन्य विहार योजना- यह योजना भारत सरकार के सहयोग से चलायी जा रही है। मगरमच्छ एवं घड़ियाल के संरक्षण हेतु चंबल घाटी क्षेत्र को राष्ट्रीय चंबल वन्य जीव विहार घोषित किया गया है। इसका वानिक मुख्यालय रणथम्भौर से संचालित होता है। इसके अन्तर्गत 3 राज्यों उत्तर) प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान में चम्बल के विस्तार वाले क्षेत्र आते हैं। इसकी स्थापना वर्ष (1979 में की गई।

प्रोजेक्ट एलीफैण्ट)1992)- यह योजना पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा भारत सरकार एवं राज्य सरकार की संयुक्त सहायता से उत्तर प्रदेश एलीफैन्ट रिजर्व हेतु चलायी जा रही है। यह 744 वर्ग किमीवन क्षेत्र में बिजनौर और सहारनपुर जनपद में विस्तृत है। .

इको डेवलपमेंट प्रोग्राम- इसके अन्तर्गत प्रदेश के दुधवा टाइगर रिजर्व, चन्द्रप्रभा वन्य जीव विहार कैमूर वन्य जीव विहार, राष्ट्रीय चम्बल वन्य जीव विहार, रानीपुर वन्य जीव विहार, विजय सागर पक्षी विहार, समान पक्षी विहार सुरहाताल पक्षी विहार को शामिल किया गया है।

टाइगर प्रोटेक्शन फोर्स- इसके अन्तर्गत केन्द्र सरकार के सहयोग से 112 सदस्यीय टाइगर प्रोटेक्शन फोर्स का गठन किया गया है।

राज्य पक्षी सारस संरक्षण योजना- राज्य में सारस की संख्या में हो रहे निरन्तर कमी को दूर करने हेतु इस योजना को चलाया जा रहा हैं। वर्तमान में पूरे विश्व में लगभग 8000 सारस बचे हुए है। जिनमें से 40% सारस उत्तर प्रदेश में पाए जाते हैं। इनमें से अधिकांश सारस बुलंदशहर, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, इटावा, अलीगढ़, औरैया कन्नौज जनपदों में पाए जाते है।

इन्टीग्रेटेड डेवलपमेन्ट ऑफ लाइफ हैबिटेट्स- केन्द्र सरकार की सहायता से यह योजना सभी वन्य विहारों के विकास हेतु चलायी जा रही है, इसमें 2002-03 से सभी पक्षी विहारों को शामिल कर लिया गया है। वन देवी संरक्षण योजनाउत्तर प्रदेश के मऊ में वन देवी जैव विविधता क्षेत्र का संरक्षण एवं विकास व - वन देवी पार्क का जीर्णोधार हेतु यह योजना चलायी जा रही है।

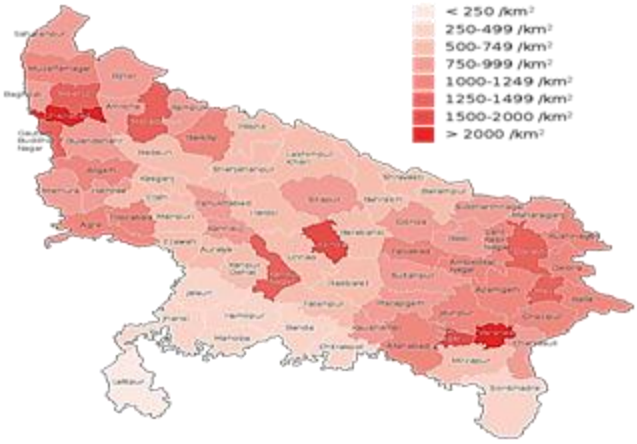

3:उत्तर प्रदेश: जनांकिकी, जनसंख्या एवं जनगणना

उत्तर प्रदेश भारतीय सभ्यता का उद्गम स्थल रहा है। अति प्राचीन समय से विभिन्न जाति एवं सामाजिक समूह इस क्षेत्र में आये और यहीं बस गये। इस राज्य में भारतवर्ष की जनसंख्या का 16.51 प्रतिशत भाग निवास करता है तथा भौगोलिक दृष्टि से यह राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र एवं आन्ध्र प्रदेश राज्यों के पश्चात पाँचवे स्थान पर है। इसका भौगोलिक क्षेत्र भारत के भौगोलिक क्षेत्र का 7.3 प्रतिशत है। इसका सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्र 2,40,928 वर्ग किमी0 है। प्रशासनिक दृष्टि से उत्तर प्रदेश 18 मण्डलों में विभाजित है जिसमें 75 जनपद, 915 नगर एवं नगर क्षेत्र, 17 नगर निगम, 198 नगर पालिका परिषद्, 438 नगर पंचायतें 59019 ग्राम पंचायतें, 821 विकास खण्ड, 97814 आबाद ग्राम, 350 तहसीलें, 17670 डाकघर हैं।

राजनैतिक दृष्टि से उत्तर प्रदेश लोकसभा में 80 सदस्य, राज्यसभा में 31 सदस्य, विधानसभा में 404 सदस्य तथा विधान परिषद् में 100 सदस्य चुनकर भेजता है। **आर्थिक दृष्टि** से यह उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश में कार्य करने वालों का प्रतिशत 23.7 है जिनमें से 65. 9 प्रतिशत कृषक तथा 5.6 प्रतिशत औद्योगिक क्षेत्र में कार्य करने वाले हैं। उत्तर प्रदेश में प्रति व्यक्ति राज्य आय बाजार) (नवीन श्रृंखला) वर्ष (मूल्यों पर2011-12 के स्थायी भावों पर वर्ष 2016-17 (त्वरित अनुमान प्रति व्यक्ति आय रु (38884 है। इस प्रकार औद्योगिक एवं आर्थिक दृष्टि से उत्तर प्रदेश एक पिछड़ा राज्य है तथा क्षेत्रीय असंतुलन से भी ग्रसित है क्योंकि इसका पश्चिमी क्षेत्र कृषि उत्पादन की दृष्टि से अच्छा क्षेत्र है तथा अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक उद्योग एवं शहरी क्षेत्रों से युक्त है जबकि अन्य क्षेत्र विशेषकर बुन्देलखण्ड क्षेत्र कम कृषि उत्पादन, कम संख्या में औद्योगिक इकाइयाँ, औद्योगिक उत्पाद के कम निवल मूल्य इत्यादि समस्याओं से ग्रस्त है। प्रदेश का यह आर्थिक पिछड़ापन इसकी सामाजिक स्थिति पर खराब प्रभाव डालता है।

उत्तर प्रदेश जनसंख्या नीति, 2000

प्रदेश में प्रथम जनसंख्या नीति की घोषणा 11 जुलाई, 2000 को की गयी। जिसमें प्रतिबन्धात्मक उपायों की जगह जनसंख्या वृद्धि को गरीबी, स्वास्थ्य एवं विकास की व्यापक समस्या से जोड़कर देखा गया है। इस नीति में सामुदायिक भागीदारी, महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार, निजी क्षेत्र की सहभागिता एवं स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार इत्यादि पर बल दिया गया है। इन सभी लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु निम्न प्रावधान किये गये हैं-

- जनसंख्या पर खर्च किये जाने वाले कुल बजट का 10% पंचायतों के माध्यम से खर्च।
- परिवार कल्याण कार्यक्रमों हेतु 'जनसंख्या कोष' की स्थापना।
- 2016 तक प्रजनन दर 2.1% लाना।
- वर्ष 2016 तक बालिकाओं के विवाह की वर्तमान उम्र 16.4 वर्ष से बढ़ाकर 19.5 वर्ष तक करना।
- वार्षिक नसबंदी को बढ़ाकर 2005 तक 10 लाख और 2009 तक 13 लाख करना व गर्भ निरोधक प्रयोग करने वाले व्यक्तियों की दर को 2016 तक 52% तक पहुँचाने का लक्ष्य।
- राजकीय सेवाओं तथा सरकारी लाइसेन्सों में महिलाओं का 33% आरक्षण।
- कम उम्र में विवाह करने पर सरकारी नौकरी से वंचित रखना।
- विवाह का पंचायतों के माध्यम से अनिवार्य पंजीकरण।
- मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में जनसंख्या एवं विकास आयोग का गठन।

उत्तर प्रदेश जनसंख्या नीति, 2021

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 2021-2030 की अवधि के लिए एक 'नई जनसंख्या नीति' की घोषणा की गयी है। 'उत्तर प्रदेश पॉपुलेशन कंट्रोल), स्टेबलाइजेशन एंड वेलफेयर बिल (2021 में जनसंख्या नियंत्रण में मदद करने वालों को प्रोत्साहन देने का प्रावधान है। उत्तर प्रदेश सरकार के अनुसार, उत्तर प्रदेश में पारिस्थितिकी और आर्थिक संसाधनों की मौजूदगी सीमित है। सभी नागरिकों को मानवजीवन की - मूलभूत आवश्यकताओं, जैसे भोजन, साफ पानी, अच्छा घर, गुणवत्ता वाली शिक्षा, जीवन यापन के अवसर और घर में बिजली मिलनी चाहिए। ऐसे में जनसंख्या नियंत्रण करना जरूरी है।

नई जनसंख्या नीति 2021-30 का लक्ष्य

- नई नीति का लक्ष्य 2026 तक कुल प्रजनन दर को वर्तमान में प्रति हजार आबादी पर 2.7 से घटाकर 2.1 और वर्ष 2030 तक 1.7 करना है।
- आधुनिक गर्भनिरोधक प्रचलन दर को वर्तमान में 31.7 से बढ़ाकर वर्ष 2026 तक 45 और वर्ष 2030 तक 52 करना है।
- पुरुषों द्वारा 3 उपयोग किए जाने वाले गर्भनिरोधक तरीकों को 10.8 से बढ़ाकर वर्ष 2026 तक 15.1 और वर्ष 2030 तक 164 करना है।

- मातृ मृत्यु दर को 197 से घटाकर 150 से 98 तक और शिशु मृत्यु दर को 43 से घटाकर 32 से 22 तक एवं पांच वर्ष से कम आयु के शिशुओं की मृत्यु दर को 47 से घटाकर 35 से 25 तक कम करना है।

नई जनसंख्या नीति 2021 30 के मुख्य बिन्दु

स्थानीय निकाय के चुनाव : मसौदे में इस बात की सिफारिश की गई है कि 'दो बच्चों की नीति' का उल्लंघन करने वालों को स्थानीय निकाय के चुनाव में हिस्सा लेने की इजाजत नहीं होगी। इसके अतिरिक्त वो सरकारी नौकरियों के लिए योग्य नहीं होंगे और सरकारी सब्सिडी का फायदा भी नहीं उठा पाएंगे।

सरकारी कर्मचारियों को लाभ : मसौदे के अनुसार, दो बच्चों के नियम का पालन करने वाले सरकारी कर्मचारियों को सेवाकाल के दौरान दो अतिरिक्त इनक्रीमेंट मिलेंगे। माँ या पिता बनने पर (तन वृद्धिवे) पूरे वेतन और भत्तों के साथ 12 महीने की छुट्टी मिलेगी। इसके अतिरिक्त, नेशनल पेंशन स्कीम के तहत नियोक्ता के अंशदान में तीन फीसदी का इजाफा होगा।

आर्थिक मदद : इस ड्राफ्ट में कहा गया है कि अगर कोई दंपत्ति सिर्फ एक बच्चे की नीति अपनाकर नसबंदी करा लेते हैं तो सरकार उन्हें बेटे के लिए एक मुश्त 80,000 रुपये और बेटी के लिए 1,00,000 रुपये की आर्थिक मदद देगी।

पॉपुलेशन फंड का निर्माण: इस अधिनियम का पालन कराने के लिए 'पॉपुलेशन फंड' बनाया जाएगा। इसके मुताबिक, सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर प्रसूति केंद्र बनाये जाएंगे। परिवार नियोजन का प्रचार किया जाएगा और यह तय किया जाएगा कि पूरे राज्य में गर्भधारण करने, जन्म और मृत्यु का पंजीकरण अनिवार्य रूप से हो। इसके अतिरिक्त प्रस्तावित मसौदे में राज्य सरकार के कर्तव्यों का भी जिक्र किया गया है।

जनसंख्या स्थिरीकरण का लक्ष्य : जनसंख्या स्थिरीकरण को लक्षित करते हुए मसौदे में कहा गया है कि राज्य विभिन्न समुदायों के बीच जनसंख्या का संतुलन बनाए रखने का प्रयास करेगा। इसके अतिरिक्त, उन समुदायों, संवर्गों और भौगोलिक क्षेत्रों में जागरूकता और व्यापक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे जिनकी प्रजनन दर अधिक है।

जनसंख्या संबंधी आंकड़े

जनसंख्या के दृष्टिकोण से उत्तर प्रदेश का भारत के राज्यों में प्रथम स्थान है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश की कुल जनसंख्या 19.98 करोड़ है जो भारत की वर्ष 2011 की कुल जनसंख्या लगभग 121 करोड़ का 16.5 प्रतिशत है।

जनसंख्या घनत्व : उत्तर प्रदेश में वर्ष 1991 में प्रति वर्ग किमी0 पर 548 व्यक्ति थे जो कि 2001 में 690 तथा 2011 में 829 प्रति वर्ग किमी0 हो गये जो कि राष्ट्रीय औसत 382 से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि जनसंख्या के घनत्व की दृष्टि से भी व्यक्तियों का भार प्रति किमी0 क्षेत्र के अनुसार बढ़ रहा है।

जनसंख्या वृद्धि : वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार वर्ष 2001-11 की अवधि में कुल जनसंख्या की दशकीय वृद्धि में प्रदेश का भारत के राज्यों में गत दशक की भाँति ग्यारहवाँ स्थान रहा। 2001 - 11 की अवधि में उकी कुल जनसंख्या की दशकीय वृद् .प्र.धि में)20.23 प्रतिशत थी जबकि उक्त अवधि में भारत की दशकीय वृद्धि)17.7 प्रतिशत से अधिक रही। (1991-2001 की अवधि में उक्त वृद्धि)25.8 प्रतिशत थी जो उक्त अवधि में भी भारत की दशकीय वृद्धि (21.5 प्रतिशत से अधिक थी।

उत्तर प्रदेश के कुछ मदों के आर्थिक क्षेत्रवार आँकड़े

उत्तर प्रदेश को 4 आर्थिक क्षेत्रों यथा- पूर्वी, पश्चिमी, केन्द्रीय एवं बुन्देलखण्ड क्षेत्र में बाँटा गया है। आर्थिक क्षेत्रवार कुछ मदों के आँकड़े निम्न तालिका में दृष्टिगत हैं-

	आर्थिक क्षेत्र	कुल जनसंख्या (लाखों में)	जनसंख्या का प्रतिशत	भौगोलिक क्षेत्रफल हजार वर्ग किमी0	जनसंख्या का घनत्व (प्रति वर्ग किमी.)	प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या
1	पूर्वी	804	40.0	86 (35.6%)	931	952
2	पश्चिमी	743	37.2	80 (33.2%)	930	884
3	केन्द्रीय	355	18.0	46 (19.0%)	785	895
4	बुन्देलखण्ड	97	4.8	29 (12.2%)	329	877

उक्त तालिका से ज्ञात होता है कि पूर्वी क्षेत्र की जनसंख्या 400 प्रतिशत है तथा जनसंख्या की दृष्टि से यह सबसे बड़ा क्षेत्र है, इसके बाद क्रमशः पश्चिमी क्षेत्र (37.2 प्रतिशत) व केन्द्रीय क्षेत्र (18.0 प्रतिशत) तथा सबसे बाद बुन्देलखण्ड क्षेत्र (4.8 प्रतिशत) आता है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भी प्रदेश के क्षेत्रफल का 35.6 प्रतिशत भाग पूर्वी क्षेत्र में है, जो प्रथम स्थान पर तथा इसके बाद क्रमशः पश्चिमी क्षेत्र (33.2 प्रतिशत) केन्द्रीय क्षेत्र (19.0 प्रतिशत) तथा बुन्देलखण्ड क्षेत्र (12.2 प्रतिशत) क्षेत्रफल का स्थान है।

लिंगानुपात : स्त्री पुरुष अनुपात से तात्पर्य प्रति हजार पुरुषों-पर स्त्रियों की संख्या से है। वर्ष 1901 से 2011 की अवधि में स्त्री-पुरुष अनुपात के आँकड़े तालिका में दर्शाये गये हैं-

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रदेश में प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या वर्ष 1901 की जनगणनानुसार 938 थी इसके पश्चात् वर्ष 1991 तक इसमें कमी एवं मिश्रित प्रवृत्ति रही। वर्ष 2001 से इसमें पुनः वृद्धि आरम्भ हुई और यह बढ़ते हुए वर्ष 2001 एवं 2011 में क्रमश :898 एवं 912 हो गयी। भारत में वर्ष 2011 में यह संख्या 943 है जब कि वर्ष 2001 में यह 933 ही थी । शिशु लिंगानुपात में निरन्तर गिरावट की प्रवृत्ति चिन्तनीय है।

साक्षरता : वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश में साक्षरों की संख्या 1144 लाख है जिनमें 682 लाख पुरुष तथा 462 लाख महिला साक्षर हैं तथा प्रदेश का साक्षरता प्रतिशत 677 है जो भारत के संगम अवधि के साक्षरता प्रतिशत 73.0 से कम है जबकि वर्ष 2001 में यह प्रतिशत 56.3 था जो भारत के संगत अवधि में साक्षरता प्रतिशत 64.8 से कम था।

उत्तर प्रदेश में दिव्यांग : (विकलांग) वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार प्रदेश में 4157514 कुल विकलांग व्यक्ति हैं जिसमें 763988 दृष्टिहीनता, 266586 मूक, 1027835 बहरापन, 677713 गति, 76603 मानसिक, 181342 मानसिक मंदता, 946436 अन्य एवं 217011 बहु विकलांगता की श्रेणी में आते है। प्रदेश में विकलांग व्यक्तियों का कुल जनसंख्या से प्रतिशत 2.08 है।

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या: वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश की कुल जनसंख्या)1998.12 लाखमें अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या (क्रमशः413.58 लाख एवं 11.34 लाख थी जो कुल जनसंख्या की क्रमशः 20.7 प्रतिशत तथा 0.6 प्रतिशत थी जबकि इसी अवधि में भारत में यह प्रतिशत क्रमश :16.6 एवं 8.6 था।

जन्म दर, मृत्यु दर एवं शिशु मृत्यु दरः

एम बुलेटिन भारत सरकार के अनुसार प्रदेश में वर्ष .एस .आर .2000 में जन्म दर मृत्यु दर तथा शिशु मृत्यु दर क्रमशः 32.8 10.3, 83 थी जो निरंतर गिरते हुए वर्ष 2013 में क्रमश :27.2, 7.7, एवं 50 हो गयी है एवं पुनः गिरते हुए वर्ष 2015 में क्रमश :26.7, 7.2 एवं 46.0 हो गयी है एवं पुनः गिरते हुए वर्ष 2016 में क्रमश :26.2, 69 एवं 43.0 हो गयी है। राष्ट्रीय स्तर पर वर्ष 2013 में उक्त संख्या क्रमशः 21.4, 7.0, 40 एवं वर्ष 2015 में उक्त संख्या क्रमश :20.8, 6.5 एवं 37.0 है एवं 2016 में उक्त संख्या क्रमश :20.4, 6.4 एवं 34.0 है। प्रदेश में जन्म दर, मृत्यु दर तथा शिशु मृत्यु दर सम्बन्धी आँकड़े (प्रति हजार)

उत्तर प्रदेश में प्रमुख धर्मानुसार जनसंख्या: वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार प्रदेश में 1593.1 लाख (79.8 प्रतिशत) हिन्दू, 384.8 लाख (19.3 प्रतिशत) मुस्लिम, 3.6 लाख (0.2 प्रतिशत) ईसाई, 64 लाख (0.3 प्रतिशत) सिक्ख, 21 लाख (0.1 प्रतिशत) बौद्ध, लाख (0.1 प्रतिशत) जैन एवं 60 लाख (0.3 प्रतिशत) अन्य एवं अवर्णित धर्म के व्यक्ति निवास करते हैं।

4:उत्तर प्रदेश नवीकरणीय ऊर्जा विकास

प्रदेश के विकास के साथसाथ ऊर्जा की माँग में अनवरत बढ़ोत्तरी हो रही है। ऊर्जा के परम्परागत स्त्रोत - सीमित होने तथा उनके दोहन से पर्यावरणीय प्रदूषण बढ़ने के दृष्टिगत नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा प्रसार को उच्च-ने तथा इसके प्रचारस्त्रोतों पर आधारित ऊर्जा के उत्पादन को बढ़ाप्राथमिकता प्रदान की जा रही है। ऊर्जा की मुख्यधारा में महत्वपूर्ण सहभागिता करने के लिये अब आगे नयी और वृहत्तर सम्भावनायें स्पष्ट दिखाई दे रही है। बायोमास एवं लघु जलविद्युत के साथसाथ अब सौर ऊर्जा पर - की बड़ी परियोजनाओं की स्थापना का मा आधारित मेगावाट क्षमतार्ग भी प्रशस्त हो रहा है। प्रदेश में ग्रिड संयोजित सोलर पावर जेनरेशन तथा रूफटॉप पावन जेनरेशन की दिशा में कार्य किया जा रहा है। निःसन्देह अब हम उस लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं जिसकी परिकल्पना इस अभिकरण के गठन के समय की गयी थी।

सौर ऊर्जा

प्रदेश के ऊर्जा स्रोत विभाग के अधीन एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में वैकल्पिक ऊर्जा विकास संस्थान की स्थापना 1983 में की गयी, जिसके अधीन जनपदीय स्तर पर 55 जनपदों में परियोजना क्रियान्वयन हेतु यूपीनेडा)UPNEDA) के कार्यालय खोले गये हैं। इस संस्थान द्वारा वैकल्पिक ऊर्जा कि विभिन्न कार्यक्रमों यथासोलर कुकर -, सोलर वाटर हीटर, सोलर प्रकाश संयंत्र, सोलर फोटो वोल्टाइक पम्प, पवन मानीटरिंग तथा जल विद्युत जैसे अपारम्परिक ऊर्जा स्रोतों के दोहन हेतु उपयुक्त तकनीकों के विकास एवं प्रसार के लिए विभिन्न योजनाओं को क्रियान्वित किया जा रहा हैं। जिसके अंतर्गत ग्रिड संयोजित सौर फोटोवाल्टाइक पॉवर प्लांट प्रदेश में सरायसादी गाँव (मऊ), कल्याणपुर गाँव (अलीगढ़), हरैया में (बस्ती)100-100 किलोवाट क्षमता के ग्रिड संयोजित सोलर फोटोवोल्टाइक पॉवर प्लांटों की स्थापना 1992 में अनुसंधान परियोजना के रूप में की गई थी तथा केन्द्र सरकार के सहयोग से यूपीनेडा

द्वारा घोसी (मऊ), चिनहट व कन्नौज में नवीन व नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के शोध विकास व (लखनऊ) प्रशिक्षण हेतु केन्द्र स्थापित किए गए हैं।

- **सोलर सिटी कार्यक्रम-** इस कार्यक्रम के अंतर्गत केन्द्र सरकार द्वारा आगरा, मुरादाबाद व प्रयागराज को सोलर सिटी के रूप में विकसित करने हेतु सहायता दी जा रही है। सौर फोटोवोल्टिक तकनीक पर आधारित 100-100 किलोवाट क्षमता की 2 परियोजनाएं उत्तर प्रदेश में कल्याणपुर एवं (अलीगढ़) में स्थापित की गई हैं। (मऊ) घोसी
- **NTPC की सौर आधारित निर्माणाधीन परियोजनाएँ हैं-** बिलहोर)85 मेगावाट(, औरेया)12 मेगावाट ( ) एवं रिहंद20 मेगावाट । इसके अतिरिक्त औरेया में(20 मेगावाट की तैरती हुई सौर ऊर्जा परियोजना भी कार्यरत है। NTPC की प्रदेश में सौर आधारित प्रवर्तित)Commissoned) परियोजनाएं हैं - - (कानपुर) बिलहोर140 मेगावाट, दादरी -5 मेगावाट, ऊँचाहार -10 मेगावाट, सिंगरौली -15 मेगावाट एवं औरेया 8 मेगावाट।
- **सौर ऊर्जा नीति, 2017-** इस नीति के अनुसार 2022 तक कुल 10700 मेगावाट के सोलर प्लांट बनाये जाने थे। बुंदेलखण्ड क्षेत्र में गैर कृषि भूमि की उपलब्धता के कारण अधिकांश सोलर पार्क ललितपुर, जालौन, महोबा, झाँसी, सोनभद्र, मिर्जापुर आदि जिलों में स्थापित किए जाने है। भारत एक उष्णकटिबंधीय देश है (ट्रापिकल), जिसमें लगभग 300 दिन सौर विकिरण प्राप्त होता है तथापि देश के ऊर्जा मिश्रण में सौर ऊर्जा का योगदान अत्यन्त न्यून है। देश में कुल स्थापित 329000 मेगावाट क्षमता में से सोलर फोटोवोल्टाईक संयंत्रो से विद्युत उत्पादन की क्षमता मात्र 12500 मेगावाट अप्रैल, 2017 तक थी। सौर पॉवर परियोजनाओं की आर्थिक व्यवहारिता एवं जीवाष्म ईंधन के मूल्यों में वृद्धि के कारण भविष्य में सौर पॉवर की मार्केट में प्रभावी बढ़ोत्तरी अपेक्षित है। भारत सरकार द्वारा वर्ष 2030 तक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से 40 प्रतिशत विद्युत उत्पादन की बचनबद्वता और उक्त के अंतर्गत वर्ष 2022 तक 100000 मेगावाट सोलर पॉवर से लक्षित उत्पादन, जिसमें से 40000 मेगावाट सोलर रूफटॉप परियोजना की स्थापना से प्राप्त किया जाना निश्चित है, के आलोक में सौर ऊर्जा से विद्युत उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा। इसके अतिरिक्त संशोधित राष्ट्रीय टैरिफ नीति -2016 के अनुसार वर्ष 2021 तक सौर ऊर्जा की 08 प्रतिशत भागीदारी राज्य के ऊर्जा मिश्रण में लक्षित है। उत्तर प्रदेश (छोड़कर जल विद्युत उत्पादन को) सरकार नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से विद्युत उत्पादन हेतु कृत संकल्पित है एवं उसके द्वारा आर्थिक एवं पर्यावरणीय उद्देश्यों को बढ़ावा देते हुए सतत् विकास गति प्राप्त करने हेतु आवश्यक कदम उठाये जा रहे है। राज्य में सौर ऊर्जा की संभावित क्षमता 22300 मेगावाट है, जिसके दोहन से राज्य सरकार राज्य की ऊर्जा आवश्यकता की पूर्ति एवं नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय .एम) एन भारत सरकार द्वारा राज्य के लिए सौर ऊर्जा उत्पादन हेतु निर्धारित (.ई.आर.10700 मेगावाट लक्ष्य सके अंतर्गतजि)4300 मेगावाट लक्ष्य रूफटॉप परियोजनाओं के लिए निर्धारित हैकी प्राप्ति (हेतु करना चाहती है। राज्य में ऊर्जा की मांग की पूर्ति एवं उपलब्धता समस्त ग्रामीण एवं शहरी परिवारो को वर्ष 2018-19 तक 24 घण्टे विद्युत आपूर्ति उपलब्ध कराने का राज्य सरकार का लक्ष्य था। इस महत्वकांक्षी लक्ष्य की पूर्ति के लिए उत्तर प्रदेश में पॉवर सेक्टर परिदृश्य को पूर्णतया

रूपांतरित करने एवं सौर ऊर्जा की वृहद सम्भावनाओं के दोहन की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त राज्य में सौर ऊर्जा परिनियोजन से निवेश आकर्षित होगा, जिससे राज्य में रोजगार के अवसरों में बढ़ोत्तरी होगी। सोलर उद्योगो द्वारा परियोजनाओं की कमिशनिंग के पूर्व एवं निर्माण अवधि में तथा सौर परियोजनाओं के पूर्ण उपयोगी जीवनकाल में परियोजनाओं के संचालन एवं रखरखाव हेतु नियमित रोजगार उपलब्ध होता है। सोलर उद्योगों में निवेश एवं घरेलू स्थानीय सोलर पैनल / विनिर्माण से कुशल एवं अकुशल क्षेत्र में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर सृजित हो सकेगें।

क्रमांक	विवरण	क्षमता
1.	यूटिलिटी स्केल सोलर प्रोजेक्ट्स पार्क	14000 मेगावाट
2.	सोलर रूफटॉप प्रोजेक्ट्स	
a)	सोलर रूफटॉप (आवासीय क्षेत्र)	4,500 मेगावाट
b)	सोलर रूफटॉप (गैर आवासीय संस्थान)	1500 मेगावाट
3.	विकेन्द्रित सौर उत्पादन पी)0एम0 कुसुम योजना घटक सी-1 एवं सी-2)	2000 मेगावाट
4.	रोजगार सृजन कौशल विकास	संख्या-30,000

सौर ऊर्जा नीति 2017 के उद्देश्य

- राज्य में सौर ऊर्जा से विद्युत उत्पादन की परियोजनाओं की स्थापना के लिए निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करना और निवेश के अवसर प्रदान करना।
- सभी को पर्यावरण के अनुकूल एवं सस्ती बिजली उपलब्ध कराने हेतु सहायता प्रदान करना।
- राज्य में शोध एवं विकास, नवोन्मेष एवं कौशल विकास को बढ़ावा देना।
- 8 प्रतिशत के "Solar Renewable Purchase Obligation यानी नवीकरणीय सौर ऊर्जा की खरीद को सुनिश्चित करने के लक्ष्यों को वर्ष "2022 तक प्राप्त करना।

उत्तर प्रदेश सौर ऊर्जा नीति -2022

ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के सम्बन्ध में वैश्विक प्रतिबद्धता के दृष्टिगत हरित ऊर्जा की आपूर्ति पर बल दिया जाना आवश्यक है। गैर जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से 50 प्रतिशत संचित विद्युत उत्पादन क्षमता वर्ष 2030 तक स्थापित करने हेतु भारत सरकार वचनबद्ध है। उ0प्र0 सरकार जलवायु परिवर्तन के वर्तमान और संभावित प्रभाव को महत्व देते हुये राज्य में स्वच्छ ऊर्जा

स्रोतों को बढ़ावा देने के लिए संकल्पित है। उ0प्र0 में वृहद सौर ऊर्जा संसाधन एवं गीगावाट स्केल की सौर ऊर्जा क्षमता उत्पन्न करने की अपार सम्भावनायें है। इस नीति के द्वारा राज्य की पूर्ण सौर ऊर्जा क्षमता का लाभ उठाने के लिए एक समग्र परिस्थितिकी तंत्र विकसित करने की योजना बनाई गयी है। भारत के महत्वाकांक्षी सौर ऊर्जा क्षमता विस्तार कार्यक्रम के कदम से कदम मिलाने के लिए उ0प्र0 सरकार राज्य में रूफटॉप सोलर पीवी परियोजनाओं की स्थापना, विकेन्द्रित सौर ऊर्जा प्रणाली, अल्ट्रा मेगा सौर ऊर्जा पार्क और यूटिलिटी स्केल परियोजना से सौर ऊर्जा का विस्तार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

परिकल्पना एवं उद्देश्य:

- उत्तर प्रदेश में विश्वसनीय और टिकाऊ सौर ऊर्जा की पहुँच सभी के लिए सुनिश्चित कराना।
- राज्य में ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए, जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करना एवं पारंपरिक और नवीकरणीय ऊर्जा का प्राप्त करना। "इष्टतम ऊर्जा मिश्रण "
- सौर ऊर्जा उत्पादन और भंडारण के क्षेत्र में निजी क्षेत्र के निवेश के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करना।
- निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करना और सौर ऊर्जा के प्रविस्तारण के लिए निवेश के अवसर प्रदान करना।
- अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में कौशल वृद्धि और रोजगार के अवसरों के के लिए मानव संसाधन का विकास।
- सौर ऊर्जा तकनीकी के सम्बन्ध में आमजन में जागरूकता उत्पन्न कराना।

नीति का लक्ष्य : राज्य में 2026-27 तक 22000 मेगावाट की सौर ऊर्जा परियोजनाओं का निम्नानुसार लक्ष्य प्राप्त करना है -:**ऊर्जा पार्क :** वैकल्पिक ऊर्जा से संबंधित कार्यक्रमोंमानस -संयंत्रों के विषय में जन / क ो सजीव प्रदर्शन के माध्यम से जानकारी उपलब्ध कराने के लिए प्रदेश के विभिन्न जिलों में ऊर्जा पार्कों की स्थापना की जा रही है। भारत सरकार द्वारा प्रदेश के कई जिलों में ऊर्जा पार्कों की स्थापना की गई है। लखनऊ के चिड़ियाघर में एक राज्य स्तरीय ऊर्जा पार्क की स्थापना की गई है।

बायो ऊर्जाः

बायोगैस संयंत्र : गोबर तथा जैविक अवशिष्टों पर आधारित संस्थागत बायोगैस संयंत्र की स्थापना सरकारी, अर्द्धसरकारी, चौरिटेबिल, प्राइवेट डेयरी फार्मों आदि संस्थाओं में सरकार द्वारा कई तरह के सहयोग देकर करायी जाती है। इससे प्राप्त गैस का उपयोग खाना पकाने, प्रकाश व्यवस्था तथा इन्जन चलाने में किया जाता है।

बायोमास गैसीफायर संयंत्र : यह संयंत्र बायोमास धान की भूसी व लकड़ी को अत्यन्त ज्वलनशील गैस में परिवर्तित कर देता है, जिसे प्रोड्यूसर गैस कहते है। उत्पादित गैस का उपयोग सीधे जलाकर अथवा इन्जन चलाकर विद्युत उत्पादन में किया जाता है। प्रदेश की 171 से अधिक औद्योगिक इकाइयों द्वारा विभिन्न क्षमता के गैसीफायर संयंत्रों की स्थापना से 41.65 मेगावाट विद्युत क्षमता सृजित हुई।

इण्डस्ट्रीयल वेस्ट आधारित प्लांट : विभिन्न औद्योगिक इकाइयों डिस्टलरीज, फूड प्रोसे इण्डस्ट्रीज, डेरीज, पल्प एण्ड पेपर मिल्स आदि से निकलने वाले कचरों से प्रदेश में 150 मेगावाट के प्लांट बनाये जा सकते हैं। 2016-17 के अंत तक प्रदेश में डिस्टलरीज से निकले वाले कचरों पर आधारित 102 मेगावाट क्षमता का प्लांट स्थापित किया जा चुका था।

बगास वेस्ड विद्युत परियोजनाएं : उत्तर प्रदेश के विभिन्न चीनी मिलों में उपलब्ध खोई से (बगाज) :अनुमानत1500 मेगावाट तक अतिरिक्त विद्युत सृजित की जा सकती है। निजी क्षेत्र की लखीमपुर, मुरादाबाद, रोजा (शाहजहांपुर), बिजनौर, बरेली, गाजियाबाद, बुलंदशहर, बागपत, मुजफ्फरनगर तथा बिजनौर आदि जिलों में दिसम्बर 2016 -17 के अन्त तक 65 निजी क्षेत्र के चीनी मिलों द्वारा कुल 1900 मेगावाट की परियोजनाएँ स्थापित की जा चुकी है।

पवन ऊर्जाः केन्द्रीय संस्था एमएनआरई की रिपोर्ट के अनुसार राज्य में 80 मीकी ऊँचाई पर पवन ऊर्जा . से विद्युतउत्पादन का 1260 मेगावाट पोटेन्शियल उपलब्ध है। वर्तमान में अध्ययन हेतु टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड द्वारा 80 मीमॉनीटरिंग मास्ट शाहजहांपुर व लखीमपुर खीरी में ऊँचाई के दो विण्ड . स्थापित कराये गए हैं। यूपीनेडा द्वारा ऐसे मास्ट गोण्डा, बलरामपुर व सिद्धार्थनगर में स्थापित कराए गए हैं।

Ministry of Jal Shakti, Government of Uttar Pradesh

IRRIGATION & WATER RESOURCES DEPARTMENT

Serving the Nation Since 1823

5:उत्तर प्रदेश में सिंचाई

सिंचाई मृदा को कृत्रिम रूप से पानी देकर उसमें उपलब्ध जल की मात्रा में वृद्धि करने की क्रिया है और आमतौर पर इसका प्रयोग फसल उगाने के दौरान, शुष्क क्षेत्रों या पर्याप्त वर्षा ना होने की स्थिति में पौधों की जल आवश्यकता पूरी करने के लिए किया जाता है। सिंचाई किसी कृषि प्रधान क्षेत्र की अनिवार्य आवश्यकता है। कृषि की सफलता विभिन्न फसलों के लिए जल उपलब्धता पर निर्भर करती है। इसके अतिरिक्त सिंचाई का प्रयोग मृदा को सूखकर कठोर बनने से रोकने, फसल को पाले के प्रकोप से बचाने एवं खरपतवार की वृद्धि पर लगाम लगाने आदि के लिए किया जाता है।

20वीं शताब्दी के प्रारंभ तथा स्वतंत्रता के पश्चात् उत्तर प्रदेश में सिंचाई सुविधाओं का विकास तेजी से हुआ। प्रदेश में सिंचाई के प्रमुख साधन नलकूप, नहर, तालाब, झील, पोखर, कुँआ आदि द्वारा किया जाता है। स्वतंत्रता से पूर्व सिंचाई सुविधाओं के विकास के लिए प्रदेश के सहारनपुर जिलें में 1828 ईमें . इसके पश्चात् आने वाले वर्षों में प्रदेश में नहर सिंचाई की विभिन्न पहला सिंचाई कार्यालय खोला गया। परियोजनाएं शुरू की गई। जो विशेष कर पश्चिमी उत्तर प्रदेश को लाभ पहुँचाने वाली रहीं।

प्रदेश की कृषि का मानसून पर निर्भरता और उसकी अनियमितता ने स्वतंत्रता के पश्चात् प्रदेश में सिंचाई सुविधाओं का तीव्र गति से विकास को मजबूर किया। वर्ष 2017-18 में उमें शुद्ध बुआई क्षेत्र .प्र. से शुद्ध सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत)Percentage of net irrigated area to net area sown) 86.85 प्रतिशत था। नवीनतम उपलब्ध आंकड़ों)2016-17) के अनुसार उ त्रका सकल सिंचित क्षे .प्र.216 लाख हेक्टेयर है।

नलकूप द्वारा सिंचाई : नलकूप 20वीं शताब्दी में प्रदेश में सिंचाई का प्रमुख साधन बनकर उभरा प्रदेश में सर्वाधिक सिंचाई नलकूपों द्वारा की जाती है। नलकूप द्वारा सिंचाई के मामलें में प्रदेश का प्रथम

स्थान है। यह प्रदेश के कुल सिंचित क्षेत्र का लगभग 75 प्रतिशत है। नलकूपों द्वारा सिंचाई को लघु सिंचाई के अंतर्गत रखा जाता है। प्रदेश में सर्वप्रथम इसका प्रयोग 1960 में मेरठ जिले से प्रारंभ हुआ। यह पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सिंचाई का एक लोकप्रिय साधन है। प्रदेश के मेरठ, फिरोजाबाद, मैनपुरी, इटावा, सहारनपुर, बुलंदशहर, अलीगढ़, मुजफ्फरनगर आदि जनपदों में नलकूपों द्वारा सर्वाधिक सिंचाई की जाती है। प्रदेश के किसान निजी और सरकारी दोनों प्रकार के नलकूपों का प्रयोग करते हैं। जिनमें निजी नलकूपों की संख्या अधिक है। गिरता भूमिगत जलस्तर प्रदेश में नलकूप सिंचाई के लिए एक चिंता का विषय है जिसे अटल भूजल योजना तथा अन्य जल संचयन विधियों द्वारा बढ़ाये जाने की जरूरत है जिससे प्रदेश में नलकूप सिंचाई एवं कृषि को संवहनीय)sustainable) बनाया जा सके।

नहरों द्वारा सिंचाई : उत्तर प्रदेश में गंगा एवं उसकी सहायक नदियों का विस्तृत जाल पाया जाता है। यह नदियाँ हिमालयी तथा मानसून जल प्राप्त करने के कारण सततवाहनी है। प्रदेश में इन पर नहरों का विकास कर सिंचाई की उचित व्यवस्था की गयी है। उ में .प्र.75063 किमीलंबी नहरों का विस्तार है। . स्थान है। का प्रथम .प्र.नहरों द्वारा सिंचित क्षेत्र में उ

उत्तर प्रदेश की कुछ प्रमुख नहरें:

ऊपरी गंगा नहर का निर्माण कार्य 1840 1854 के मध्य किया गया। इसे हरिद्वार के समीप गंगा के दाहिने किनारे से निकाला गया है। इसके मुख्य नहर की लंबाई 340 किमी है। वर्ष .2006 से इसका आधुनिकीकरण किया गया। इस नहर से सहारनपुर, मेरठ, गाजियाबाद, मुजफ्फरनगर, अलीगढ़, मथुरा, मैनपुरी, इटावा कानपुर, फर्रुखाबाद की लगभग 7 लाख हे भूमि की सिंचाई की जाती है।

6:उत्तर प्रदेश में सिंचाई

खनिज प्राकृतिक रूप से विद्यमान समरूप तत्व हैं जिनकी एक निश्चित आंतरिक संरचना होती है। खनिज सामान्यतः अयस्कों में पाये जाते है। खनिज संसाधन की दृष्टि से उत्तर प्रदेश एक निम्न मध्यम श्रेणी वाला प्रदेश है। प्रदेश में खनिज संपन्न क्षेत्रों में हिमालय श्रेणी के कुछ निचले भाग, विंध्यक्रम की शैलें और बुंदेलखण्ड क्षेत्र हैं। भारत में होने वाले कुल खनिज उत्पादन में उत्तर प्रदेश का योगदान लगभग 3 प्रतिशत है। उत्तर प्रदेश में पाए जाने वाले खनिजों में कोयला, सोना, चूना पत्थर, जिप्सम, बॉक्साइट, डोलोमाइट, मैग्नेसाइट, तांबा, ग्लाससैंड-, संगमरमर, फायर क्ले, पाइरोफाइलाइट एवं यूरेनियम प्रमुख है। उअन्य क्षेत्रों में खनिज संसाधनों का प्रायः अभाव पाया जाता है जिसका प्रमुख कारण के .प्र. इन क्षेत्रों का जलोढ़ निक्षेपों से निर्मित होना है। ऐसी भूगर्भिक संरचना वाले क्षेत्रों में प्रायः खनिजों का अभाव पाया जाता है।

प्रदेश में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों की खोज अन्वेषण एवं विकसित करने से संबंधित प्रमुख संस्थायें-

1. भूतल एवं खनिज कर्म निदेशालयः इसकी स्थापना वर्ष 1955 में की गई। इसका प्रमुख कार्य खनिज संसाधनों की खोज व्यवसायिक स्तर के खनिज भण्डारों पर आधारित उद्योग की स्थापना हेतु शोध एवं अन्वेषण कार्य का निष्पादन करना है।
2. उत्तर प्रदेश राज्य खनिज विकास निगमः इसकी स्थापना वर्ष 1974 में की गई। इसका प्रमुख कार्य भूतल एवं खनिज कर्म निदेशालय द्वारा खोजे गए खनिज भण्डारों को विकसित कर उनपर आधारित उद्योगों का विकास करना है।

30 मई 2017 को योगी सरकार द्वारा नई खनन नीति की घोषणा की गई। यह प्रदेश सरकार की दूसरी खनन नीति है इससे पूर्व प्रदेश में प्रथम खनिज नीति की घोषणा वर्ष 1998 में की गई थी।

उत्तर प्रदेश खनन नीति, 2017

खनन नीति के मूलमंत्र) राज्य सरकार द्वारा सुशासन :Good Governance) एवं भ्रष्टाचार मुक्त)Anti Corruption) के मूल मंत्रों पर आधारित नीति बनाने का संकल्प है जिसमें निम्न मंत्र हैं-

I. पारदर्शिता
II. कानून का राज
III. समता
IV. आम सहमति
V. प्रभावी
VI. उत्तरदायी
VII. भागीदारी

उपरोक्त मंत्रों के आधार पर निम्न राज्य सरकार द्वारा खनिज सेवा के सभी निम्न तत्वों को प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है-

- खनिजों के विषय में जागरूकता)Awareness)
- सर्व सामान्य को खान एवं खनिजों तक पहुँच)Accesibility)
- सर्व सामान्य को खनिजों की उपलब्धता)Availability)
- खनिजों का मूल्य जन साधारण के सामर्थ्य के अनुसार हो)Affordability)
- उपरोक्त के आधार पर जन साधारण में खनिजों की स्वीकार्यता)Acceptability)

खनन नीति के उद्देश्यः

खनन नीति 2017 को निम्न उद्देश्यों के लिए प्रख्यापित की जा रही है -:

- खानों एवं खनिजों के माध्यम से प्रदेश का सामाजिक एवं आर्थिक सतत विकास)Sustainable Socio Economic Development)
- खनिजों का संरक्षण)Mineral Conservation)
- पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी)Environment Ecology) का संतुलन बनाये रखना
- खनिजों से प्राप्त होने वाले राजस्व का राज्य के कुल राजस्व प्राप्ति में अंश)State's Own Resouces) 1.85% को बढ़ाकर आगामी 05 वर्षों में 39% किया जाना ।

- अवैध खनन नियंत्रण हेतु तकनीकी हस्तक्षेप तथा अवैध खनन एवं परिवहन में लिप्त परिवहन पर / व्यक्तियों के विरूद्ध कठोर दण्ड की कार्यवाही |
- खनिज सेक्टर में रोजगार के अवसर को बढ़ावा ।
- खनिज उद्योग में स्वच्छ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहन ।
- खनिजों के वैज्ञानिक विकास, जिसमें खनिजों की उपयोगिता, विपणन, मानव संसाधन सम्मिलित हैं, हेतु तकनीकी ज्ञान एवं सुविधाएँ तथा परामर्श उपलब्ध कराना।
- इच्छुक उद्यमियों को खनिज आधारित सूचना आंकड़ो की उपलब्धता कराना। /
- खनिज विकास प्रक्रिया में निजी पूँजी निवेश को प्रोत्साहन और उद्यमिता का विकास।
- खनिज विकास हेतु आधुनिक अन्वेषण तकनीक के माध्यम से नये खनिज भण्डारों के अन्वेषण में तीव्रता।
- खनिजों के परिहार की स्वीकृति की प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने हेतु ई -ई / नीलामी-ई / टेण्डरिंग- या विडिंग प्रणाली लागू किया जाना तथा खनन प्रशासन की कार्यप्रणाली को सरलीकृत करते हुए प्रक्रि एवं भ्रष्टाचार मुक्त बनाना। में पारदर्शिता लाना
- खनन संक्रियाओं से प्रभावित व्यक्तियों तथा क्षेत्रों के लिए कल्याणकारी योजनाओं का संचालन|

उत्तर प्रदेश में पाये जाने वाले खनिज :

कोयला : उजाते हैं। यह कोयला में सोनभद्र जिले के गोंडवाना चट्टानों में कोयले के भंडार पाये .प्र. सोनभद्र के सिंगरौली क्षेत्र से प्राप्त किया जाता है। इस क्षेत्र में कोल इंडिया लिमिटेड द्वारा खनन का कार्य किया जाता है।1 अप्रैल, 2019 की के अनुस (मिनरल डाटा रिपोर्ट)ार, सिंगरौली क्षेत्र में 1061.80 मिलियन टन कोयला भंडार है। प्रदेश के कुल खनिज उत्पादन मूल्य का 47 प्रतिशत भाग कोयले
से प्राप्त होता है।

बॉक्साइट: यह एल्युमिनियम का अयस्क है यह उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले के रेणुकूट से प्राप्त किया जाता है। इसके अतिरिक्त प्रदेश के चंदौली, बांदा, ललितपुर आदि जिलों में बॉक्साइट के भंडार है।

चूना पत्थर : उत्तर प्रदेश के चूना पत्थर उत्पादक जिले मिर्जापुर एवं सोनभद्र है। चूना पत्थर के संचित भण्डार में उत्तर प्रदेश का दूसरा स्थान है। मिर्जापुर में चुनार एवं कजराहट तथा सोनभद्र में चुर्क और डल्ला प्रमुख चूना पत्थर उत्पादक क्षेत्र है। चूना पत्थर का उपयोग प्रमुख रूप से सीमेंट बनाने में किया जाता है।

जिप्सम: जिप्सम का उपयोग सीमेंट, आमोनिया सल्फेट तथा गंधक बनाने में किया जाता है। यह कैल्शिम का एक हाइड्रोलाइज्ड सल्फाइट है इसे सैलेनाइट भी कहा जाता है। उके झांसी और हमीरपुर .प्र. ।इसके प्रमुख उत्पादक जिले है

डोलोमाइट: यह प्रदेश के मिर्जापुर बांदा एवं सोनभद्र जिलों से प्राप्त किया जाता है। मिर्जापुर का कजराहट

क्षेत्र उच्च श्रेणी के डोलोमाइट का उत्पादक है। इसका प्रयोग इस्पात उद्योग में पोर्टलैण्ड सीमेंट, प्लॉस्टर ऑफ पेरिस तथा गन्धक के तेजाब उत्पादन में किया जाता है। एण्डोलुसाइटयह खनिज प्रदेश के : मिर्जापुर और सोनभद्र जिलें में पाया जाता है। यह लोहे की अधिकता वाला खनिज है परन्तु इसमें एल्युमिना एवं क्षार की भी कुछ मात्रा पायी जाती है। इसका उपयोग पोर्सिलेन एवं स्पार्क प्लग में किया जाता है।

पाइरोफाइलाइट: यह खनिज प्रदेश के झांसी, ललितपुर, महोबा एवं हमीरपुर में पाया जाता है। इसका उपयोग कीटनाशकों के निर्माण तथा सिरेमिक उद्योग में किया जाता है।

रॉक फास्फेट : प्रदेश का बांदा जिला रॉक फास्फेट के लिये प्रसिद्ध है यहां इसके प्रचुर भण्डार पाये जाते हैं। प्रदेश का अधिकतम रॉक फास्फेट कोयला संयंत्रों से प्राप्त किया जाता है। इसका मुख्य उपयोग उर्वरक उद्योग में तथा अपनी क्षारीय प्रकृति के कारण अम्लीय मृदा के उपचार में भी किया जाता है।

यूरेनियमः प्रदेश में यूरेनियम के भण्डार वाला एकमात्र जिला ललितपुर है। यहां इसके सीमित भण्डार पाये जाते है। यह धारवाड़ एवं आर्कियन श्रेणी चट्टानों से प्राप्त की जाती है।

काँच बालू: इसे सिलिका सैंड कहते है जो गंगा एवं यमुना नदियों से प्राप्त होती है। इससे काँच बनाया जाता है। इसके अतिरिक्त काँच बालू के भण्डार चंदौली के चकिया क्षेत्र झांसी के बाला बहेट एवं मुंडारी क्षेत्र तथा चित्रकूट के बरगढ़, लौहगढ़, धनद्रौल क्षेत्र से प्राप्त किया जाता है।

7:उत्तर प्रदेश मृदा

मृदा या मिट्टी पृथ्वी की ऊपरी सतह पर मिलने वाले असंगठित पदार्थों की ऊपरी परत है, जो चट्टानों के विखंडन एवं वियोजन तथा वनस्पतियों के अवसादों के योग से बनती है। किसी भी क्षेत्र की मृदाएं पैतृक पदार्थ (चट्टान), जलवायु दशाएं वर्षा), तापमान(, ढाल की तीव्रता, वनस्पति और समय दीर्घकालिक), अल्पकालिक पर निर्भर करती हैं। उत्तर प्रदेश के (अलगअलग प्रकार की मिट्टियां -अलग क्षेत्रों में अलग-तिहाई भाग गंगा तंत्र की धीमी गति से बहने वाली नदियों -श के क्षेत्रफल का लगभग दोपाई जाती हैं। प्रदे द्वारा लाई गयी जलोढ़ मिट्टी की गहरी परत से बनी है। यह मिट्टी कहीं रेतीली तो कहीं चिकनी दोमट है तथा अत्यधिकउपजाऊ है राज्य के दक्षिणी भाग की मिट्टी सामान्यतः मिश्रित लाल और काली या लाल से लेकर पीली है राज्य के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में मृदा कंकरीली से लेकर उर्वर दोमट तक है। जो महीन रेत और ह्यूमस मिश्रित है। जिसके कारण कुछ क्षेत्रों में घने जंगल विद्यमान है। उत्तर प्रदेश की प्रमुख मिट्टियां-

1. **तराई मृदाएं**
2. **पर्वतपदीय मृदाएं**
3. **जलोढ़ मृदाएं**
4. **लाल और पीली मृदाएं**
5. **मिश्रित लाल एवं कालीन मृदाएं**
6. **मध्यम काली मृदाएं**
7. **कैल्शियम युक्त मृदाएं**
8. **लवण प्रभावित मृदाएं**
9. **लाल बलुई मृदाएं**

उवाडिया .की मिट्टियों को प्रो .प्र., कृष्णन एवं मुखर्जी के वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर दो भागों में विभाजित किया जाता है-

I. **गंगा के विशाल मैदान की नूतन और उपनूतन मिट्टियां तथा-**
II. **दक्षिण पठार की प्राचीन रवेदार और विंध्यन शैलीय या बुंदेलखंडीय मिट्टियां।**

गंगा के विशाल मैदान की मृदाएं

इस क्षेत्र की लगभग सम्पूर्ण मृदा को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है-

- बांगर या पुरानी जलोढ़ मृदा
- खादर या नवीन जलोढ़ मृदा

प्राचीनतम **कॉप मिट्टी क्षेत्रों को बांगर** कहते हैं। नवीन कॉप मिट्टी वाले क्षेत्रों को खादर कहते हैं। बांगर मिट्टी में फॉस्फोरस एवं चूने की पर्याप्त मात्रा पाई जाती है जबकि नाइट्रोजन, पोटाश, जीवांश आदि पदार्थों की कमी पाई जाती है। बांगर मिट्टी को दोमट, मटियार, बलुई दोमट, मूंड या पुरातन कॉप मिट्टी के नाम से भी जाना जाता है। उके पूर्वी भाग के बांगर मिट्टी को उपरहार मिट्टी भी कहा जाता है। .प्र .

खादर मिट्टी नदियों के बाढ़ वाले मैदानों में पाई जाती है। खादर मिट्टी हल्के रंग वाली छिद्रयुक्त तथा महीन कणों वाली होती है। खादर मिट्टी बांगर की अपेक्षा अधिक उर्वरा शक्ति वाली होती है। खादर मिट्टी में सामान्यतः चूना, पोटाश, मैग्नीशियम तथा जीवांशों की अधिकता जबकि नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं ह्यूमस पदार्थों की कमी पाई जाती है। खादर मिट्टी को भूतन कॉप, बलुआ, सिल्ट बलुआ, मटियार दोमट आदि नामों से जाना जाता है।

लाल एवं काली मिश्रित मिट्टी राज्य के झांसी डिवीजन, मिर्जापुर, सोनभद्र के साथसाथ प्रयागराज जिले - के करछना और मेजा तहसील में पाई जाती है।इन जिलों के ऊपरी पठारी भाग में मिट्टी लाल है एवं दो प्रकार की है परवा और राकड़ | परवा हल्की रेतीली या रेतीली दोमट है, जबकि राकड़ क्षारीय है।

भाबर पर्वतपदीय क्षेत्र हैं, यहां की मिट्टी मोटी बालुओं तथा कंकड़ और पत्थरों से निर्मित बहुत छिछली है। इस क्षेत्र में नदियां लुप्त हो जाती हैं। भाबर के समानांतर निचले भाग में तराई क्षेत्र विस्तारित है। यहां की मृदा उपजाऊ, नम, दलदली और समतल है। इस मृदा में गन्ना एवं धान की अच्छी पैदावार होती है। उ रामगंगा दोआब क्षेत्रों में जलोढ़ एवं कॉप -यमुना दोआब एवं गंगा-के गंगा .प्र.मिट्टी का विस्तार है। उ . यमुना तथा उनकी सहायक नदियों के -में जलोढ़ एवं दोमट मिट्टी सर्वाधिक क्षेत्र पर पाई जाती है। गंगा .प्र बाढ़ वाले क्षेत्रों में प्लाइस्टोसीन युग में निर्मित बलुई मिट्टी के10-12 फीट ऊंचे टीलों को भूड़ कहते हैं। **भूड़ हल्की दोमट एवं मिश्रित बलुई मिट्टी होती है।**

दक्षिण पठार की प्राचीन रवेदार और विंध्यन शैलीय या बुंदेलखंडीय मिट्टियां

बुंदेलखंडीय मृदा उके दक्षिणी पठार की मिट्टियों को बुंदेलखंडीय मिट्टी कहते हैं। इस क्षेत्र में कावड़ .प्र., पडवा (परवा), भोंटा, माड (मार), राकड़ आदि मिट्टिया पायी जाती हैं। इस क्षेत्र की काली मृदा को करेल, कपास अथवा रेगुर आदि नामों से भी जाना जाता है। भोंटा मिट्टी विंध्य पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है। माड मिट्टी (मार), काली मिट्टी या रेगुर मिट्टी के समान चिकनी होती है। माड मिट्टी में सिलिकेट (मार), लोहा एवं एल्युमीनियम खनिज पदार्थ पाए जाते हैं। माड मिट्टी उके पूर्वी क्षेत्रों में पाई जाती है। इस .प्र. मिट्टी में चूना अधिक होता है।

पड़वा मिट्टी उके हमीरपुर जालौन और यमुना नदी के ऊपरी जिलों में पाई जाती है। पड़वा मिट्टी हल्के .प्र. लाल रंग की होती है। राकड़मिट्टी उके दक्षिण पर्वतीय एवं पठारी ढलानों पर पाई जाने वाले मिट्टी है। .प्र.

लाल मिट्टी उके मिर्जापुर .प्र., सोनभद्र जिलों में पाई जाती है। लाल मिट्टी का निर्माण बालूमय लाल शैलों के अपक्षय से हुआ है। लाल मिट्टी का विस्तार बेतवा एवं धसान नदियों के जलप्लावित क्षेत्रों में भी पाया जाता है। लाल मिट्टी में नाइट्रोजन, जीवांश, फॉस्फोरस एवं चूना खनिजों की कमी पाई जाती है। लाल मिट्टी में गेहूं, चना एवं दलहन आदि फसलें उगाई जाती हैं।

ऊसर एवं रेह मिट्टी उके अलीगढ़ .प्र., मैनपुर, कानपुर, सीतापुर, उन्नाव एटा इटावा, रायबरेली एवं लखनऊ जिलों में पाई जाती है तथा ये लवण से प्रभावित हैं। रेहयुक्त क्षारीय ऊसर भूमि का उत्तर प्रदेश में अधिक विस्तार है।
बंजर तथा भाट नामक मृदा उके गोरखपुर .प्र., बस्ती, महराजगंज कुशीनगर, सिद्धार्थ नगर एवं गोंडा जिलों में पाई जाती है। बंजर मिट्टी चिकनी और बलुई चिकनी दोनों प्रकार की होती है, इसमें चूना अपेक्षाकृत कम होता है। प्रदेश के जालौन झांसी, ललितपुर और हमीरपुर जिलों में काली मृदा का विस्तार होने के कारण चना, गेहूं, अरहर एवं तिलहन प्रमुख उपजें हैं।

जलप्लावित नदी के किनारे पाई जाने वाली मिट्टी को उ.प्रमें . **ढूंह** के नाम से जाना जाता है। उत्तर प्रदेश के उत्तर पूर्व में स्थित कुशीनगर जिले की मिट्टी को स्थानीय भाषा में-'भाट' कहा जाता है। इस मिट्टी में मोटे अनाज वाली फसलें उगाई जाती हैं।

टर्शियरी मिट्टी उत्तर प्रदेश में शिवालिक पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती है। यह मिट्टी चाय की खेती के लिए उपयुक्त है। उपश्चिम भाग की मिट्टी में फॉस्फेट की कमी पाई जाती है। उत्तर प्रदेश के -के उत्तर .प्र . जौनपुर, आजमगढ़ तथा मऊ जनपदों की मृदा में पोटाश की कमी पाई जाती है। जालौन, झाँसी, ललितपुर, हमीरपुर के क्षेत्र में काली मिट्टी भी पाई जाती है। यह मिट्टी भीगने पर फैलती हैं तथा सूखने पर सिकुड़ती है। अलीगढ़, कानपुर, सीतापुर, उन्नाव एटा इटावा, रायबरेली तथा लखनऊ की मिट्टी ऊसर तथा रेह से प्रभावित है।

उत्तर प्रदेश में मृदा अपरदन की समस्याः जल बहाव अथवा वायु के वेग अथवा हिम के पिघलने से एक

स्थान की मिट्टी का अन्यत्र स्थान पर चला जाना मृदा अपरदन कहलाता है। उत्तर प्रदेश में वायु अपरदन प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्रों में एवं जलीय अपरदन पूर्वी एवं दक्षिणी क्षेत्रों में अधिक होता है। चम्बल नदी अधिग्रहण क्षेत्र में अवनालिका अपरदन सर्वाधिक होता है, जिससे उका इटावा जिला विशेष रूप से .प्र . प्रभावित है। इसके कारण ही आगरा, इटावा और जालौन जिलों में बीहड़ पाए जाते हैं। उत्तर प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र में अवनालिका अपरदन, दक्षिणी क्षेत्र में रिल अपरदन तथा पूर्वी एवं उत्तरी क्षेत्र में परत अपरदन विशेष रूप से प्रभावी है। उत्तर प्रदेश में मृदा अपरदन के मुख्य कारण मानसून वर्षा की प्रकृति, वनों का अभाव तथा ढाल की तीव्रता आदि हैं। वायु अपरदन से उके सर्वाधिक प्रभावित जिले मथुरा .प्र. का सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र हिमालय का तरा .प्र.एवं आगरा हैं। जलीय अपरदन से उई प्रदेश है। प्रदेश के अलीगढ़, मैनपुरी, कानपुर, उन्नाव एटा इटावा, रायबरेली, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, जौनपुर और प्रयागराज जिलों में अधिक सिंचाई एवं उर्वरकों के इस्तेमाल से लगभग 10 प्रतिशत भूमि ऊसर हो चुकी है। प्रदेश के पश्चिमी एवं दक्षिणी क्षेत्रों में लवणीय या क्षारीय मृदा पाई जाती है, जबकि प्रदेश के पूर्वी क्षेत्रों तराई) कुछ हिस्सों में अम्लीय मृदा पाई जाती है। (भागों में

भारत का बंजर भूमि एटलस 2019:

उत्तर प्रदेश की स्थिति उत्तर प्रदेश में बंजर भूमि, वर्ष 2008-09 के 9619.35 वर्ग किमी देश का) . 3.99 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र से कम होकर वर्ष (2015-16 में 8537.06 वर्ग किमी देश का) .3.54 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र हो गई है। उपर्युक्त अवधि में राज्य में बंजर भूमि में (1082.29 वर्ग किमीकी . कमी आई है। प्रदेश में988.36 वर्ग किमीबंजर भूमि को कृषि भूमि में परिवर्तित कि .या गया है, जबकि 89.09 वर्ग किमी बंजर भूमि को जल निकाय के रूप में परिवर्तित किया गया है। हरदोई जिले में . 79.25 वर्ग किमी तथा कानपुर देहात में .72.19 वर्ग किमी बंजर भूमि में कमी आई है। बलिया जिले में . 32.01 वर्ग किमी एवं महराजगंज में 1.83 वर्ग किमी बंजर .भूमि में वृद्धि हुई है। प्रदेश में झांसी जिले में सर्वाधिक बंजर भूमि)445.36 वर्ग किमी) है। इसके पश्चात आगरा (.426.74 वर्ग किमीका स्थान (. है। प्रदेश में लगभग2129.61 वर्ग किमीक्षारीयता / क्षारीयता से प्रभावित है। लवणता / क्षेत्र लवणता . से प्रभावित मिट्टियां मुख्यतः रायबरेली, औरैया, आजमगढ़, एटा, फतेहपुर, हरदोई, जौनपुर, कन्नौज कानपुर देहात, लखनऊ, मैनपुरी, उन्नाव में है। सर्वाधिक लवणीय क्षारीय मृदा रायबरेली जिले में है। /

8: उत्तर प्रदेश: भौगोलिक स्थिति

उत्तर प्रदेश भारत का सीमांत राज्य है जिसकी उत्तरी सीमा नेपाल को स्पर्श करती है। उत्तराखंड के गठन के पूर्व इसकी सीमाएं चीन के तिब्बत क्षेत्र से भी जुड़ी थी। प्राकृतिक रूप से उत्तर प्रदेश के उत्तर में हिमालय की शिवालिक श्रेणियां, पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम एवं दक्षिण में यमुना नदी तथा विंध्य श्रेणियां और पूर्व में गंडक नदी है। यह काफी बड़े भाग में फैला है और इसमें समतल जमीन से लेकर उत्तर में ऊँचे पहाड़ भी मौजूद है। उ. प्र. का वर्तमान भौगोलिक स्वरूप 9 नवंबर, 2000 को अस्तित्व में आया है। 9 नवंबर, 2000 को उ.प्र. के 13 पर्वतीय जिलों को काटकर उत्तरांचल (अब उत्तराखंड) राज्य का निर्माण किया गया।

भौगोलिक अवस्थिति:

भूगर्भिक दृष्टि से उ. प्र. प्राचीनतम गोंडवाना लैंड का भू-भाग है। उ. प्र. के दक्षिण भाग में स्थित पठारी भाग प्रायद्वीपीय भाग का ही अंग है, जिसका निर्माण विंध्य क्रम की शैलों द्वारा प्री-कैम्ब्रियन युग में हुआ है। उ.प्र. का अक्षांशीय विस्तार 23°52' से 31°28' उत्तरी अक्षांश के मध्य है। कुल अक्षांशीय विस्तार 7°36' है। उ.प्र. का देशांतरीय विस्तार 77°51' पूर्व से 84°38' पूर्वी देशांतर के मध्य है। प्रदेश का कुल देशांतरीय विस्तार 7°09' है। राज्य का पूर्व से पश्चिम तक विस्तार 650 किमी. तथा उत्तर से दक्षिण तक का विस्तार 240 किमी. है। राज्य का कुल क्षेत्रफल 2,40,928 वर्ग किमी. है जो देश के कुल क्षेत्रफल का 7.33 प्रतिशत है।

उत्तर प्रदेश से लगी अन्य प्रादेशिक सीमाएं

उ.प्र. की सीमाएं केंद्रशासित प्रदेश दिल्ली सहित कुल 9 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेश से लगी हुई हैं। उ.प्र. की सीमा को स्पर्श करने वाले 8 राज्य हैं- हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार एवं उत्तराखंड तथा इसकी सीमा को स्पर्श करने वाला एकमात्र केंद्रशासित प्रदेश दिल्ली है। इसकी सीमाएं उ.प्र. के गाजियाबाद एवं गौतमबुद्ध नगर से लगी हुई हैं। प्रदेश की पूर्वी सीमा बिहार एवं झारखंड से लगी हुई है। प्रदेश की उत्तरी सीमा नेपाल के अतिरिक्त उत्तराखंड एवं हिमाचल प्रदेश से लगी हुई है। उ. प्र. की पश्चिमी सीमाएं हरियाणा, राजस्थान तथा केंद्रशासित प्रदेश दिल्ली से लगी हैं। उ.प्र. की दक्षिणी सीमाएं मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ को स्पर्श करती हैं। उ.प्र. की सबसे लंबी सीमा मध्य प्रदेश से स्पर्श करती है। उ. प्र. की न्यूनतम सीमा रेखा से स्पर्श करने वाला राज्य हिमाचल प्रदेश है। उ.प्र. का एकमात्र जिला सहारनपुर है जिसकी सीमा हिमाचल प्रदेश लगती है। इसके अतिरिक्त इस जिले की सीमा हरियाणा एवं उत्तराखंड से भी लगी है। उ.प्र. के सर्वाधिक 11 जिलों को स्पर्श करने वाला राज्य मध्य प्रदेश है। सर्वाधिक 4 प्रदेशों को स्पर्श करने वाला उ.प्र. का एकमात्र जिला सोनभद्र है। यह मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड एवं बिहार को स्पर्श करता है। उ. प्र. की सीमा को स्पर्श करने वाला एकमात्र विदेशी राष्ट्र नेपाल है। मध्य प्रदेश से तीन तरफ से घिरा जिला ललितपुर है। क्षेत्रफल की दृष्टि से उ. प्र. का भारत में चौथा स्थान है। उ. प्र. से अधिक क्षेत्रफल वाले राज्य हैं- राजस्थान, मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र प्रदेश के सबसे पूर्वी एवं पश्चिमी जिले क्रमशः बलिया एवं शामली हैं। प्रदेश के सबसे उत्तरी एवं दक्षिणी जिले क्रमश: सहारनपुर एवं सोनभद्र हैं। प्रदेश के कुछ जिलें को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में भी सम्मिलित किया गया है जो है गाजियाबाद, हापुड़, मेरठ, गौतमबुद्ध नगर, बुलंदशहर, मुजफ्फरनगर, शामली एवं बागपत (कुल शामिल खेत्र- 14,826 वर्ग किमी.) हैं।

भौतिक विभागः

उत्तराखंड के गठन से पूर्व राज्य के तीन भू-भाग थे पर्वतीय क्षेत्र, मैदानी क्षेत्र और दक्षिण का पठारी क्षेत्र । परंतु उत्तराखंड के गठन के बाद पूरा पर्वतीय क्षेत्र, उत्तर प्रदेश से अलग हो गया है और अब इस पर्वतीय क्षेत्र से लगा हुआ भाबर-तराई क्षेत्र ही उत्तर प्रदेश में बचा हुआ है। उ.प्र. को वर्तमान में मुख्यत: तीन प्राकृतिक प्रदेशों में विभाजित किया गया है-

- भाबर एवं तराई का प्रदेश
- गंगा-यमुना का मैदान
- दक्षिण का पठारी प्रदेश

भाबर एवं तराई का प्रदेश

भाबर एवं तराई का प्रदेश पश्चिम में सहारनपुर से लेकर पूर्व में देवरिया एवं कुशीनगर तक एक पतली से पट्टी भाबर और तराई कहलाती है। भाबर क्षेत्र में नदियां लुप्त हो जाती हैं, जो तराई क्षेत्र में फिर से प्रकट होती हैं। भाबर क्षेत्र में जलोढ़ पंख और जलोढ़ शंकु जैसी नदी से निर्मित स्थलाकृतियां बनती हैं। भावर क्षेत्र वह पर्वतीय भू-भाग है जो कंकड़-पत्थरों से निर्मित है। इस खेत्र का विस्तार उ. प्र. के बिजनौर, सहारनपुर, पीलीभीत शाहजहांपुर एवं लखीमपुर खीरी जिलों में है। पश्चिम में यह क्षेत्र लगभग 34 किमी. चौड़ा है, परंतु पूर्व की ओर बढ़ने के साथ यह संकरा होता जाता है। तराई क्षेत्र, भाबर के दक्षिण में दलदली एवं गाद मिट्टी वाला क्षेत्र है जो महीन अवसादों से निर्मित है। घने जंगल और लंबे हाथी घासों से ढका हुआ तराई क्षेत्र कभी 80 से 90 किमी. तक चौड़ा था तथा इसके अंतर्गत सहारनपुर, बिजनौर, रामपुर, बरेली, पीलीभीत, लखीमपुर खीरी, बहराइच, गोंडा, बस्ती, सिद्धार्थ नगर, गोरखपुर, महराजगंज, देवरिया और कुशीनगर जिलों के भाग आते थे। इधर कुछ वर्षों से भूमि सुधार कार्यों के कारण इसकी चौड़ाई काफी कम हो गई है जिससे इसका काफी भाग उपजाऊ भूमि के रूप में किसानों को प्राप्त हो गया है। अब यहां गन्ना, गेहूँ और धान की फसलें रिकॉर्ड पैदावार दे रही है। अनेक जगहों पर जूट की भी अच्छी खेती हो रही है। प्रदेश के ऊंचाई वाले भागों में मिलने वाली प्राचीनतम जलोढ़ मिट्टी को रेह (Rarh) नाम से जाना जाता है। भाबर क्षेत्र और दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्र को छोड़कर पूरा प्रदेश नदियों द्वारा बाढ़ के दौरान लाई गई कांप मृदा से बना है।

गंगा-यमुना के विस्तृत मैदानी प्रवेशः

इसको तीन उप-विभागों में बांटा गया है

- **गंगा-यमुना का ऊपरी मैदान**
- **गंगा का मध्य मैदानी प्रदेश**
- **गंगा का पूर्वी मैदान**

गंगा-यमुना के ऊपरी मैदान का विस्तार लगभग 500 किमी. लंबी एवं 80 किमी. चोड़ी पट्टी के रूप में है। गंगा-यमुना के मध्य मैदानी प्रदेश का विस्तार उ.प्र. के सहारनपुर, बिजनौर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, बुलंदशहर, अलीगढ़, हाथरस, मथुरा, आगरा, मैनपुरी, एटा, बदायूं, मुरादाबाद तथा बरेली जिलों में मिलता है। गंगा के पूर्वी मैदान का विस्तार उ.प्र. के वाराणसी, जौनपुर, गाजीपुर, आजमगढ़, बलिया, मिर्जापुर, सोनभद्र एवं संत रविदास नगर में है। गंगा-यमुना के मैदान का निर्माण कांप मिट्टी से हुआ है। गंगा-यमुना के विस्तृत मैदानी प्रदेश की समुद्र तल से औसत ऊंचाई 300 मी. है। इस विस्तृत मैदानी प्रदेश का निर्माण अभिनूतन एवं अतिनूतन युग में नदी घाटी में अवसादीकरण से हुआ है। इस विस्तृत मैदानी प्रदेश का ढाल पश्चिमांचल में उत्तर से दक्षिण की ओर तथा पूर्वांचल में पश्चिमोत्तर से दक्षिण-पूर्व की ओर है।

दक्षिण का पठारी प्रदेश

दक्षिण का पठारी प्रदेश उ.प्र. में दक्षिण पठारी प्रदेश का कुल क्षेत्रफल 45200 वर्ग किमी. है। दक्षिण पठारी प्रदेश के अंतर्गत बुंदेलखंड एवं बघेलखंड के भू-भाग सम्मिलित हैं। यह क्षेत्र दक्कन के पठार का ही प्रसरण है तथा इस भू-भाग की उत्तरी सीमा यमुना तथा गंगा नदी द्वारा निर्धारित है तथा दक्षिणी सीमा विंध्य पर्वत द्वारा निर्धारित होती है। पूर्व में केन नदी तथा पश्चिम में बेतवा तथा पाहुज नदियां इसकी सीमा निर्धारित करती हैं। इसके अंतर्गत झांसी, जालौन, हमीरपुर, महोबा, चित्रकूट, ललितपुर और बांदा जिले, प्रयागराज जिले की मेजा और करछना तहसीलें गंगा के दक्षिण में पड़ने वाला मिर्जापुर का हिस्सा तथा चंदौली जिले की चकिया तहसील आती है। इस पठारी क्षेत्र की सामान्य ऊंचाई 300 मीटर के आस-पास है तथा कुछ स्थानों पर यह ऊंचाई 450 मीटर से भी अधिक है। मिर्जापुर, सोनभद्र जिले के कुछ स्थानों पर कैमूर और सोनाकर की पहाड़ियां लगभग 600 मीटर तक ऊंची हैं। बुंदेलखंड का निर्माण उ.प्र. के दक्षिण उच्च प्रदेश में विंध्य काल की प्राचीनतम नीस चट्टानों द्वारा तथा निम्न प्रदेशों में नदियों द्वारा निक्षेपित मिट्टी से हुआ है। बुंदेलखंड के पश्चिमी भाग में काली मृदा (रेगुर) का विस्तार है, जो मालवा पठार का ही विस्तार है। कैमूर शृंखला बुंदेलखंड से लगी हुई है। इसकी रचना विंध्य शैलों से हुई है। बुंदेलखंड में 'च्लास' नामक घास बहुतायत में पायी जाती है। बघेलखंड क्षेत्र की प्रमुख नदी सोन है। बघेलखंड के उत्तर एवं दक्षिण में क्रमश: सोनपुर एवं रामगढ़ की पहाड़ियां अवस्थित हैं। दक्षिण पठारी प्रदेश की औसत ऊंचाई 300 मीटर है। दक्षिण पठारी प्रदेश का ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है। दक्षिण पठारी प्रदेश की प्रमुख नदियां चंबल, बेतवा, केन, सोन एवं टोंस हैं। कम वर्षा के कारण इस पठारी क्षेत्र में वृक्ष-वनस्पतियां छोटी होती हैं। यहां की मुख्य फसलें ज्वार, तिलहन, चना और गेहूं हैं। बघेलखंड क्षेत्र में शंक्वाकार टीले बहुतायत से मिलते हैं।

ONE DISTRICT ONE PRODUCT
UTTAR PRADESH
नई उड़ान, नई पहचान

9: उत्तर प्रदेश की "एक जिला, एक उत्पाद"

उत्तर प्रदेश जैसे विशाल राज्य, जिसका भौगोलिक विस्तार 2,40,928 वर्ग किमी में हो, जहाँ 20 करोड़ 42 लाख की वृहद जनसंख्या हो, वहाँ संभव ही नहीं है कि जीवन के हर परिपेक्ष्य में विविधताएँ न हों। यहाँ विभिन्न धरातलीय क्षेत्र हैं, भिन्न भोजन व फसलें हैं, भिन्न जलवायु है और इस सबसे ऊपर विभिन्न सामुदायिक परम्पराएँ एवं आर्थिक परिपेक्ष्य हैं। इस सबसे निकलकर उत्तर प्रदेश में जो एक महान व सुंदर विविधता बनती है वह है यहाँ की शिल्पकला और उद्यमिता जो प्रदेश के छोटे छोटे कस्बों एवं शहरों में फैली है। यहाँ का हर कस्बा और जनपद अपने विशिष्ट और असाधारण उत्पादों के लिए ख्यात है।

योजना का उद्देश्य : उत्तर प्रदेश सरकार की महत्त्वाकांक्षी "एक जनपद एक उत्पाद"कार्यक्रम का उद्देश्य है कि इन विशिष्ट शिल्प कलाओं एवं उत्पादों को प्रोत्साहित किया जाए। उत्तर प्रदेश में ऐसे उत्पाद बनते हैं जो देश में कहीं और उपलब्ध नहीं हैं, जैसे प्राचीन एवं पौष्टिक कालानमक चावल, दुर्लभ एवं अकल्पनीय गेहूँ डंठल शिल्प, विश्व प्रसिद्ध चिकनकारी, कपड़ों पर जरी जरदोजी का काम, मृत पशु से प्राप्त सींगों व हड्डियों से अति जटिल शिल्प कार्य जो हाथी दांत का प्रकृति अनुकूल विकल्प है। इनमें से बहुत से उत्पाद जीटैग अर्थात भौगोलिक पहचान पट्टिका धारक हैं। ये वे उत्पाद हैं जिनसे स्थान .आई. विशिष्ट की पहचान होती है।

विविध उत्पाद को महत्व देना आवश्यक क्यों?

इनमें से तमाम ऐसे उत्पाद हैं जो अपनी पहचान खो रहे थे तथा जिन्हें आधुनिकता तथा प्रसार रूपी संजीवनी द्वारा पुनर्जीवित किया जा रहा है। जनपद विशेष से संबंधित उद्योग वैसे तो सामान्य प्रतीत होते हैं परंतु उनके उत्पाद उस क्षेत्र की विविधता एवं विलक्षणता को दर्शाते हैं। हींग, देशी घी, काँच के आकर्षक उत्पाद, चादरें, गुड़, चमड़े से बनी वस्तुएं उत्तर प्रदेश के जनपद इन वस्तुओं के उत्पादन में

विशेषज्ञता रखते हैं। ये भी संभव है कि आप उत्तर प्रदेश में निर्मित किसी उत्पाद का पहले से प्रयोग कर रहे हों और आपको इसकी जानकारी भी न हो। यहाँ लघु एवं मध्यम दर्जे की तमाम ऐसी औद्योगिक इकाइयाँ हैं जिन्हें उन्नत मशीनरी, आधुनिकीकरण एवं उत्पादक क्षमता वृद्धि की आवश्यकता है। प्रदेश में जन विविधता, जलवायु विविधता, आस्थाओं और संस्कृतियों की विविधता की तरह ही उत्पादों एवं शिल्प कलाओं में भी एक मोहक विविधता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : 'एक जिला एक उत्पाद' (ODOP: One District, One Product) की अवधारणा मूल रूप से जापान सरकार द्वारा वर्ष 1979 में प्रारंभ की गई थी। इसके उपरांत इस योजना को थाईलैंड सरकार द्वारा भी प्रचारितप्रसारित किया गया। इसके अतिरिक्त इस तरह की योजना का मॉडल - याइंडोनेशि, फिलीपींस, मलेशिया और चीन द्वारा भी अपनाया गया। 24 जनवरी, 2018 को उत्तर प्रदेश दिवस' के अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'एक जिला एक उत्पाद' योजना का शुभारंभ किया गया। इस योजना के माध्यम से जिले के छोटे, मध्यम और परंपरागत उद्योगों का विकास संभव हो पाएगा। इस योजना के माध्यम से राज्य में स्थानीय कौशल विकास तो होगा ही, साथ ही साथ वस्तुओं का निर्यात भी अधिक मात्रा में संभव होगा। एक जनपद एक उत्पाद योजना के क्रियान्वयन से प्रदेश की अर्थव्यवस्था के विकास में न केवल महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, अपितु प्रतिवर्ष लगभग 5 लाख नए रोजगार के अवसर भी प्राप्त होने की संभावना है।

ODOP योजना का अर्थशास्त्र : 'एक जनपद एक उत्पाद' योजनांतर्गत प्रदेश के प्रत्येक जनपद से एक विशेष उत्पाद का चिह्नांकन संबंधित उत्पाद की विशिष्टता, विपणन सामर्थ्य, विकास संभाव्यता तथा रोजगार सृजनशीलता के आधार पर किया गया है। 'एक जिला, एक उत्पाद' को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजारों में लोकप्रिय बनाने एवं प्रतिष्ठित करने हेतु विशिष्ट लोगों)Logo) विकसित किया गया है। योजनांतर्गत स्थापित होने वाली इकाइयों हेतु वित्त पोषण केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं जैसे 'मुद्रा योजना', 'स्टार्टअप इंडिया', 'स्टैंड अप इंडिया', 'प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम', 'मुख्यमंत्री रोजगार योजना' एवं 'विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना' आदि से कराया जाता है।एक जिला, एक उत्पाद को एक ब्रांड के रूप में स्थापित किए जाने हेतु उत्तर प्रदेश निर्यात प्रोत्साहन ब्यूरो, उत्तर प्रदेश व्यापार प्रोत्साहन प्राधिकरण, उ इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन एवं उत्तर प्रदेश निर्यात .प्र.संवर्धन परिषद के माध्यम से राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनियों एवं मेलों में प्रतिभाग सुनिश्चित किया जा रहा है।

योजना का क्रियान्वयन :योजना का क्रियान्वयन सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा निर्यात प्रोत्साहन विभाग द्वारा किया जा रहा है तथा इस हेतु निर्यात भवन, लखनऊ में अलग से एक ओ .पी .ओ .डी. निर्देशन एवं - निर्यात प्रोत्साहन ब्यूरो के दिशाप्रकोष्ठ की स्थापना की गई है। यह प्रकोष्ठ अपर आयुक्त प्रमुख सचिव सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा निर्यात प्रोत्साहन निर्यात आयुक्त के नियंत्रणाधीन / कार्यरत है। योजना का अनुश्रवण जनपद स्तर पर जिलाधिकारी की अध्यक्षता में मासिक आधार पर राज्य स्तर पर प्रमुख सचिव सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा निर्यात प्रोत्साहन की अध्यक्षता में प्रति

दो माह में अवस्थापना तथा औद्योगिक विकास आयुक्त की अध्यक्षता में समिति द्वारा त्रैमासिक आधार पर किया जाता है। योजना 'अनुश्रवण हेतु जनपद स्तर पर नोडल अधिकारी उपायुक्त, उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन केंद्र बनाए गए हैं। योजना के सुचारु एवं सफल क्रियान्वयन हेतु संचालित योजनाओं की जानकारी उत्पादकों की जिज्ञासाओं के समाधान, परामर्श, उत्पादन तकनीक, प्रशिक्षण, मार्केटिंग आदि से संबंधित समस्त जानकारियां एक ही स्थान पर उपलब्ध कराने हेतु एक वेब पोर्टल एवं हेल्पलाइन का विकास किया गया है। साथ ही राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर के शीर्ष टेक्निकल रिसर्च एंड डेवलपमेंट तथा प्राविधिक शिक्षण संस्थाओं के नेटवर्क को विकसित करके इस पोर्टल से जोड़ा जा रहा है, ताकि संबंधित क्षेत्र में हुए नए आविष्कारों के लाभों को व्यावहारिक रूप में उत्पादकों तक पहुंचाया जा सके। योजना के क्रियान्वयन हेतु बजटीय सहायता निर्यात आयुक्त के माध्यम से ओप्रकोष्ठ को उपलब्ध .पी .ओ .डी . कराई जाती है।

चुनौतियां:

साख की समस्या- बैंक लघु एवं कुटीर उद्योगों की नयी योजनाओं को साख प्रदान करना जोखिम मानते हैं।

नवाचार की समस्या-स्थानीय उद्योगों के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए विकसित उत्पादन प्रणाली तकनीक एवं नवाचार की समस्या।

विभागों में पारस्परिक समन्वय की समस्या - चूँकि इस योजना का वित्त पोषण केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं जैसेमुद्रा योजना -, स्टार्ट अप इण्डिया, स्टैण्ड अप इण्डिया, मुख्यमंत्री रोजगार योजना आदि द्वारा कराया जायेगा। अतः विभिन्न विभागों में पारस्परिक समन्वय बनाना भी एक चुनौती होगी ।

इन तमाम चुनौतियों के बावजूद प्रदेश के आर्थिक विकास तथा एमसेक्टर की सुदृढ़ता हेतु .ई.एम.एस . यह योजना बहुआयामी प्रभाव वाली सिद्ध हो सकती है। रोजगार सृजन एवं संवृद्धि हासिल करने हेतु इस योजना के तमामहितधारकों को परस्पर सहयोग करना होगा । यह योजना क्षेत्र में जनसंख्या संबंधी लाभांश प्राप्त करने की भी कुंजी है।

एक जिला एक उत्पाद योजना के तहत जिलावार चिह्नित उत्पाद			
जनपद	**चिह्नित उत्पाद**	**जनपद**	**चिह्नित उत्पाद**
1. अमरोहा	वाद्य यंत्र (ढोलक)	2. बस्ती	काष्ठ शिल्प वुड)क्राफ्ट(
3. अमेठी	मूंज उत्पाद	4. बहराइच	गेहूं डंठल हस्तशिल्प
5. अलीगढ़	ताले एवं हार्डवेयर	6. बागपत	घरेलू सजावटी सामान
7. अंबेडकर	वस्त्र उत्पाद	8. बारांबकी	कपड़ा उत्पाद)Stol)

नगर			
9. आगरा	चमड़ के उत्पाद	10. बांदा	शजर पत्थर शिल्प
11. आजमगढ़	काली मिट्टी की कलाकृतियां	12. बिजनौर	काष्ठ शिल्प (वुड क्राफ्ट)
13. इटावा	वस्त्र उद्योग	14. बुलंदशहर	चीनी मिट्टी के बर्तन
15. प्रयागराज	मूंज उत्पाद	16. मऊ	वस्त्र उत्पाद
17. उन्नाव	जरी जरदोजी	18. मथुरा	स्वच्छता संबंधी उपकरण (सैनिटरी फिटिंग)
19. एटा	घुघरू, घंटी एवं पीतल उत्पाद	20. महराजगंज	फर्नीचर
21. औरया	दुग्ध प्रसंस्करण देशी)घी(	22. महोबा	गौरा पत्थरशिल्प
23. कन्नौज	इत्र	24. मिजांपुर	कालीन
25. कानपुर देहात	एल्युमीनियम के बर्तन	26. मुजफ्फरनगर	गुड़
27. कानपुर नगर	चमड़े के उत्पाद	28. मुरादाबाद	धातु शिल्प
29. कासगंज	जरी जरदोजी		
30. जौनपुर	ऊनी कालीन (दरी)	31. श्रावस्ती	जनजातीय शिल्प
32. झांसी	स्टफ्ड टॉयज	33. सम्भल	सींग एवं अस्थि उत्पाद
34. देवरिया	सजावटी उत्पाद	35. सहारनपुर	लकड़ी पर नक्काशी
36. पीलीभीत	बांसुरी	37. सिद्धार्थनगर	खाद्य प्रसंस्करण काला नमक) (चावल
38. प्रतापगढ़	खाद्य प्रसंस्करण (आंवला)	39. सीतापुर	दरी
40. फतेहपुर	बेडशीट एवं आयरन फैब्रिकेशन वर्क्स	41. सुल्तानपुर	मूंज उत्पाद
42. फर्रुखाबाद	वस्त्र छपाई	43. सोनभद्र	कालीन
44. फिरोजाबाद	कांच उत्पाद	45. संत कबीर नगर	पीतल के बर्तन
46. अयोध्या	गुड़	47. भदोही	कालीन
48. बदायूं	जरी जरदोजी	49. हमीरपुर	जूते
50. बरेली	जरी जरदोजी	51. हरदोई	हथकरघा
52. बलरामपुर	खाद्य प्रसंस्करण (दाल)	53. हाथरस	हिंग
54. बलिया	बिंदी उत्पाद (टिकुली)	55. हापुड़	घरेलू सजावटी सामान होम) (फर्निशिंग
56. कुशीनगर	केले के रेशे से बने उत्पाद	57. मेरठ	खेल का सामान
58. कौशाम्बी	खाद्य प्रसंस्करण (केला)	59. मैनपुरी	तारकशी कला
60. गाजियाबाद	अभियांत्रिकी उत्पाद	61. रामपुर	पैचवर्क के साथ एल्पिक वर्क

62. गाजीपुर	जूट वॉल हैंगिंग	63. रायबरेली	काष्ठ शिल्प वुड)क्राफ्ट(
64. गोरखपुर	टेराकोटा	65. लखनऊ	चिकनकारी एवं जरी जरदोजी
66. गोंडा	खाद्य प्रसंस्करण (दाल)	67. लखीमपुर खीरी	जनजातीय शिल्प
68. गौतमबुद्ध नगर	सिले सिलाये वस्त्र	69. ललितपुर	जरी सिल्क साड़ी
70. चित्रकूट	लकड़ी के खिलौने	71. वाराणसी	बनारसी रेशम साड़ी
72. चंदोली	जरी जरदोजी	73. शामली	लौह कला
74. जालौन	हस्त निर्मित कागज कला	75. शाहजहांपुर	जरी जरदोजी

10: उत्तर प्रदेश के विकास की चुनौतियाँ और रणनीति

केन्द्र सरकार की भाँति उत्तर प्रदेश सरकार भी 'सबका साथसबका विकास-' की तर्ज पर कार्य कर रही है। समाज के सभी वर्गों और राज्य के प्रत्येक नागरिक व क्षेत्र के विकास के लिए सरकार कृत संकल्प है। प्रदेश के समग्र सामाजिक एवं आर्थिक विकास को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से विभिन्न सेक्टरों के अंतर्गत चुनौतियों को चिन्हित करते हुए विकास की रणनीति बनाया जाना अपेक्षित है। विकास में प्रदेश की समस्त जनता की सहभागिता सुनिश्चित करते हुए राज्य सरकार का लक्ष्य प्रदेश को उत्कृष्ट एवं प्रभावी जनसेवाएं उपलब्ध कराना है।

इसके अन्तर्गत एक ओर जहाँ प्रदेश के वित्तीय संसाधनों को बढ़ाये जाने के साथसाथ भारत सरकार की - महत्वपूर्ण योजनाओं एवं कार्यक्रमों के अन्तर्गत अधिकाधिक केंद्रीय सहायता प्राप्त करके उसको सही ढंग से लागू किया जाना सम्मिलित है, वहीं दूसरे ओर प्रदेश सरकार द्वारा महत्वाकांक्षी परियोजनाओं के निर्माण हेतु रणनीति, निजी निवेश अर्जित करने का प्रयास, जनसामान्य के लिए विभिन्न अवस्थापना सुविधाओं का सृजन, कृषि, ऊर्जा, शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, नगरीय सुविधाएं, श्रम एवं ग्राम विकास सेक्टरों के विशिष्ट कार्य बिन्दुओं समाज के कमजोर वर्गों के लिए सामाजिक सुरक्षा तथा प्रशासन तंत्र को प्रभावी बनाए जाने के साथ कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में पारदर्शिता लेने के लिए तंत्र विकसित करने का प्रयास अपेक्षित है। समग्र विकास हेतु विभिन्न सेक्टरों के अन्तर्गत चिन्हित चुनौतियों तथा प्रदेश विकास की रणनीति **निम्नवत प्रस्तुत हैं:**

चुनौतियाँ

कृषि तथा सम्वर्गीय क्षेत्र

- कृषकों की आय वर्ष 2022 तक दोगुनी किया जाना।
- किसानों की आय में वृद्धि कर उनके जीवन स्तर को ऊपर उठाना।
- किसानों को गुणवत्तायुक्त कृषि निवेशों की आपूर्ति सुनिश्चित करना।
- मृदा स्वास्थ्य में गिरावट को रोकना।
- विभिन्न फसलों की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता में वृद्धि करना।
- कृषि उत्पादों की उत्पादन लागत को कम करना।
- छोटी जोतों को लाभकारी बनना।
- कृषि पर निर्भरता कम करने हेतु रोजगार सृजन के लिए कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देना।
- कृषि उत्पादों विशेषकर औद्योगिक फलों का समुचित भण्डारण।
- औद्यानिक फसलों के आच्छादन, उत्पादन आदि का आंकड़ा आधार खाता तैयार करना ।
- प्रदेश में वन क्षेत्र का विस्तार तथा वृक्षारोपण का आच्छादन बढ़ाना प्रमुख चुनौती है।
- प्रदेश में वनों के अवैध कटान की रोकथाम चुनौतीपूर्ण कार्य है।

पशुपालन तथा सम्वर्गीय क्षेत्र

- पशु आहार पशु चारा का उत्पादन बढ़ाना। /
- कुक्कुट तथा मत्स्य उत्पादन में वृद्धि करना ।
- अतिहिमीकृत वीर्य का उत्पादन बना।
- सहकारी क्षेत्र की डेयरियों का सुदृद्दीकरण एवं विस्तार करना।
- दुग्ध उत्पादन एवं विपणन व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण।

उद्योग

- निजी पूँजी निवेश को आकर्षित करना।
- औद्योगिक विकास हेतु आधारभूत संरचना उपलब्ध कराना।
- निर्वाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करना।
- संसाधन का विकास करना।
- औद्योगिक उत्पादों के निर्यात को बना देना।
- हस्तशिल्प तथा दस्तकारी इकाइयों को जीवनक्षम बनाना।
- सम्यक रूप से औद्योगिक वातावरण में सुधार।

सेवा क्षेत्र

- विभिन्न सेवाओं के मूल्य वर्धन का आंकलन।
- सेवा क्षेत्र के अन्तर्गत विभिन्न आर्थिक क्रियाकलापों में संलग्न इकाइयों का आंक-ड़ा आधार तैयार करना।
- सेवा क्षेत्र में संलग्न श्रम शक्ति का कौशल विकास।

अवस्थापना, ऊर्जा एवं संचार तथा परिवहन

- प्रदेश में सड़क घनत्व को राष्ट्रीय स्तर तक लाना।
- नये विद्युत उत्पादन इकाइयों के निर्माण की बाधाओं को दूर करना ।
- पारेषण लाइनों का विस्तार।
- विद्युत आपूर्ति में सुधार।
- लाइन हानियों में कमी लाना।
- क्रियाशील विद्युत उत्पादन इकाइयों को क्षमता में वृद्धि।
- वैकल्पिक ऊर्जा को बढ़ावा देना।
- नगरीय यातायात को सुविधाजनक एवं सरल बनाना।

ग्राम्य विकास

- पंचायती राज को करना
- ग्रामीण समाज के समस्त वर्गों की पंचायती राज संस्थाओं में भागीदारी सुनिश्चित करना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता हेतु जागरूकता उत्पन्न करना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में अवस्थापना संसाधनों का निर्माण।
- ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के अवसर सुनिश्चित करना।
- योजनाओं का प्रत्यक्ष लाभ लक्षित जनसामान्य समूह को पहुंचाना।
- योजनाओं के कार्यन्वयन में पारदर्शिता लाना।

शिक्षा

- 6 से 14 आयु वर्ग के सभी बालकबालिकाओं को शिक्षा प्रदान करना।-
- विभिन्न वर्गो में साक्षरता अन्तराल को कम करना।
- ड्राप आउट दर को कम करना।
- प्राथमिक शिक्षा की पहुँच में सुधार करना।
- विद्यालय के प्रबन्धन में समुदाय को सक्रिय भागीदारिता सुनिश्चित करना ।
- शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक, शैक्षिक तथा लैंगिक भेद को समाप्त करना।

माध्यमिक शिक्षा

- प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र क्षेत्रीय विषमता को दूर करना।
- प्रत्येक विकास खण्ड में बालिकाओं हेतु कम से कम एक हाईस्कूल स्तर का विद्यालय खोला जाना।
- समग्र शैक्षिक गुणवत्ता की अभिवृद्धि।

उच्च शिक्षाप्राविधिक शिक्षा/

- शिक्षण संस्थाओं की स्थापना एवं विस्तार
- शिक्षा को रोजगार से जोड़ना
- ईस्मार्ट क्लासेस / लर्निंग -
- समग्र शैक्षिक गुणवत्ता की अभिवृद्धि

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

- ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार।
- जन्मदर मृत्युदर, शिशु मृत्युदर तथा मातृत्व मृत्युदर में कमी लाना।
- सुरक्षित प्रसव।
- प्रदेश में उच्च स्तरीय चिकित्सा संस्थानों की स्थापना।
- चिकित्सा क्षेत्र में निजी निवेश को आकर्षित करना।

- लिंगानुपात को बढ़ावा।
- टीकाकरण का विस्तार।

सामाजिक कल्याण

- छात्रवृत्ति तथा पेंशन सम्बन्धी लाभार्थी परक योजनाओं के कार्यान्वयन में पारदर्शिता लाना।
- सुरक्षा उपलब्ध कराना।

लोक निधि

- सातवें वेतन आयोग की संस्तुतियों तथा लघु एवं सीमान्त किसानों को फसली ऋण माफी योजना आदि के कारण राज्य सरकार पर बड़े वित्तीय व्यय भार के फलस्वरूप प्राथमिक घाटा, राजस्व घाटा एवं राजकोषीय घाटा आदि वित्तीय संकेतकों को नियंत्रण में रखना कठिन चुनौती है।
- प्रदेश में निवेश हेतु बेहतर माहौल उपलब्ध कराया जाना।
- प्रदेश में रोजगार के अवसर सृजित करना।

11: उत्तर प्रदेश की प्रमुख नदियां

भारत भर में उत्तर प्रदेश अपनी नदियों के एक बड़े सिंचाई बेसिन के चलते प्रसिद्ध है। यही नदीबेसिन - उपयुक्त बनाता है। यही नहीं यमुना-को अधिक उपजाऊ और कृषि है जो प्रदेश की मैदानी भूमि, गोमती, सोन, घाघरा, गंगा आदि प्रमुख नदियों के चलते ही कई तीर्थ नगर भी विकसित हुए है। उत्तर प्रदेश में तीस से अधिक नदियों से मिलकर पांच प्रमुख नदी बेसिन बनते हैं, जो इस प्रकार हैंगंगा बेसिन -, यमुना बेसिन, रामगंगा बेसिन, घाघरा बेसिन और गोमती बेसिन। नदियों के उद्गम स्रोत के आधार पर उत्तर प्रदेश की नदियों को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

I. **हिमालय से निकलने वाली नदियां,**
II. **गंगा के मैदार से निकलने वाली नदियां तथा**
III. **प्रायद्वीपीय पठार से निकलने वाली नदियां**

गंगा और यमुना उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी नदियां है। इनका बहाव उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में विंध्याचल द्वारा निर्धारित है। उत्तर प्रदेश की अन्य प्रमुख नदियों में घाघरा, गोमती, चंबल, सोन, कर्मनाशा, चंद्रप्रभा, रिहंद बेलन एवं धसान उल्लेखनीय हैं।

हिमालय पर्वत से निकलने वाली उकी प्रमुख नदियां गंगा .प्र.,यमुना,कालीशारदा/, रामगंगा, घाघरा, गंडक और राप्ती हैं। उ के .प्र.मैदानी भाग से निकलने वाली प्रमुख नदियां गोमती, वरुणा, पांडो, सई और ईशन हैं । प्रायद्वीपीय पठार से निकलने वाली उकी प्रमुख नदियां चंबल .प्र., बेतवा, केन, सोन, टोंस, कन्हार तथा रिहंद हैं। जिनका सामान्य प्रवाह दक्षिण से उत्तर है।

गंगा नदी: उ की सर्वाधिक लंबी नदी .प्र.'गंगा नदी' है। उत्तर प्रदेश में गंगा नदी 1450 किमीलंबा मार्ग . तय करती है। गंगा नदी की **प्रमुख सहायक नदियांरामगंगा -, घाघरा, गंडक, बूढ़ी गंडक, बागमती, कोसी एवं यमुना** हैं । उत्तरी किनारे से मिलने वाली सहायक नदियां रामगंगा, गोमती, घाघरा, गंडक, कोसी व बागमती तथा दक्षिण किनाने से मिलने वाली सहायक नदियां यमुना, टोंस एवं सोन हैं। गंगा नदी, यमुना एवं पौराणिक सरस्वती नदी से प्रयागराज में मिलती है। गंगा नदी का उद्गम गोमुख से (गंगोत्री हिमनद) होता है। **उद्गम स्थान पर गंगा की मुख्य धारा को भागीरथी के नाम से जाना जाता है। भागीरथी एवं अलकनंदा नदी की ही संयुक्त धारा गंगा नदी है।** इन दोनों नदियों का संगम देव प्रयाग उत्तराखंड में होता है। धौलीगंगा नदी अलकनंदा नदी से विष्णु प्रयाग में मिलती है। मंदाकिनी नदी प्रयाग में अलकनंदा नदी से मिलती है। **हरिद्वार से गंगा नदी मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है। बिजनौर जनपद से गंगा नदी उत्तर प्रदेश में प्रवेश करती है।** गंगा नदी उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड तथा पश्चिम बंगाल राज्यों से होकर बहती है। कन्नौज के निकट गंगा नदी से रामगंगा नदीं मिलती है। गंगा नदी बांग्लादेश में बंगाल की खाड़ी से मिलती है। गंगा नदी के किनारे स्थित उपखाबाद -के प्रमुख नगर हैं .प्र., कन्नौज, कानपुर, प्रयागराज मिजांपुर वाराणसी, गाजीपुर गढ़मुक्तेश्वर आदि। कानपुर, गंगा नदी के दाएं किनारे

एवं वाराणसी बाएं किनारे पर स्थित है।

यमुना नदीः यमुना नदी का उद्गम बंदरपूंछ के पश्चिमी ढाल पर स्थित यमुनोत्री हिमनद से होता है यमुना उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश में बहती है यमुना नदी उके .प्र. सहारनपुर, शामली, बागपत, गाजियाबाद गौतमबुद्ध नगर अलीगढ़, मथुरा, आगरा, इटावा, औरैया, जालौन, हमीरपुर, बांदा, फतेहपुर एवं प्रयागराज जिलों से होकर बहती है। चंबल नदी यमुना नदी से इटावा के पास मिलती है। **बेतवा, यमुना नदी से हमीरपुर के निकट मिलती है।** बांदा में भोजा के निकट यमुना नदी से केन नदीं मिलती है। उमें यमुना नदी वृहत चाप का निर्माण क .प्र.रती है। उके मथुरा .प्र., वृंदावन आगरा इटावा काल्पी, हमीरपुर एवं कौशाम्बी यमुना नदी के किनारे अवस्थित प्रमुख नगर हैं।

रामगंगा नदीः रामगंगा नदी का उद्गम हिमालय की दूधाटोली श्रेणी से होता है। (पौड़ी गढ़वाल) **रामगंगा नदी, जिम कार्बेट नेशनल पार्क से होकर बहती है।** रामगंगा नदी कालागढ़ उत्तराखंड निकट बिजनौर) से मैदानी भागों में प्रवेश करती है। (जिला उत्तर प्रदेश

शारदा नदीः शारदा नदी का उद्गम कुमाऊं हिमालय । प्रारंभ में इसे काली गंगा सं है (मिलाम ग्लेशियन) या गौरी गंगा के नाम से जाना जाता है। शारदा नदी पीलीभीत एवं नेपाल की सीमा निर्धारित करती | शारदा नदी ब्रह्मदेव के निकट मैदानी भागों में प्रवेश करती है। सांप की भांति रोवे मेवे मार्ग से होकर प्रवाहित होने वाली नदी नदी है। शारदा एवं घाघरा नदी का संगम बहरामघाट के निकट होता है।

घाघरा नदी: घाघरा नदी का उद्गम मापेचाचुंगो हिमनद से होता है। घाघरा नदी की सहायक (तिब्बत) नदियां करनाली, शिख, टीला, सेटी, बेरी, राप्ती एवं छोटी गंडक हैं। **इसे सरयू नदी के नाम से भी जाना जाता है।** अयोध्या सरयू नदी के किनारे अवस्थित है। 1080 किमी प्रवाहित होने के बाद यह नदी छपरा . के निकट गंगा नद (बिहार)ी से मिलती है।

राप्ती नदीः राप्ती नदी का उद्गम स्थल रुकुमकोट है। राप्ती की प्रमुख सहायक नदी रोहिणी है। (नेपाल) न पर होता है।राप्ती एवं घाघरा नदियों का संगम देवरिया में बरहज नामक स्था

चंबल नदी: चंबल नदी का उद्गम जनापाव पहाड़ी, महू से होता है (मध्य प्रदेश)चंबल की प्रमुख सहायक नदियां काली सिंध, पार्वती एवं बनास हैं। चंबल नदी मध्य प्रदेश, राजस्थान एवं उत्तर प्रदेश राज्यों की सीमा को निर्धारित करती है। **चंबल नदी पर बनाए गए प्रमुख बांध हैंगांधी सागर बांध -, राणा प्रताप सागर बांध एवं जवाहर सागर बांध। चंबल नदी अपने अवनालिका अपरदन एवं बीहड़ों के लिए प्रसिद्ध है।** चंबल नदी उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में यमुना में मिल जाती है।

बेतवा नदी: बेतवा नदी का उद्गम कुमरा गांव रायसेन के झांसी .प्र.से होता है बेतवा नदी उ (.प्र.म), औरैया, जालौन एवं हमीरपुर जिलों से होकर बहती है। यह नदी हमीरपुर के समीप यमुना नदी में मिलती है। इसका संस्कृत नाम 'वेत्रवती' है। **बेतवा नदी पर निर्मित राजघाट बांध के जलाशय को 'रानी लक्ष्मीबाई**

सागर' के नाम से जाना जाता है।

केन नदी: केन नदी का उद्गम कैमूर पहाड़ियों से होता है। इसे कर्णवती उपनाम से भी जाना जाता है। केन नदी एवं यमुना नदी का संगम भोवहा से निकट होता है। (बांदा)

सोन नदी: सोन नदी का उद्गम शेषाकुंड के मिजांपुर .प्र.से होता है। सोन नदी उ (अमरकंटक पहाड़िया) भद्र जिलों से होकर प्रवाहित होती है। सोन की सहायक नदियों में रिहन्द कनहर उत्तरी कोयल एवं सोन आदि हैं।

गंगा नदी तंत्र

गोमती नदीः गोमती नदी का उद्गम उके पीलीभीत जिले की फुल्हर झील से होता है। गोमती नदी .प्र. के पीलीभीत शाहजहांपुर .प्र.उ, खीरी, सीतापुर, लखनऊ, सुल्तानपुर एवं जौनपुर जिलों से होकर प्रवाहित होती हुई गाजीपुर जिले में गंगा नदी से मिल जाती है। उकी राजधानी लखनऊ .प्र ., सुल्तानपुर और जौनपुर नगर गोमती नदी के किनारे ही स्थित हैं।

टोंस नदी: टोंस नदी का उद्गम तामकुंड कैमूर श्रेणी प्रमुख सहायक से होता है। टोंस की (मध्य प्रदेश) नदी बेलन नदी है। टोंस नदी पर कई प्रसिद्ध जलप्रपात स्थित हैं। टोंस एवं गंगा नदी का संगम सिरसा का उद्गम (जो यमुना में मिलती है) में होता है। ध्यातव्य है कि टोंस नामक एक अन्य नदी (प्रयागराज) बंदरपूंछ पहाड़ी उत्तराखंड से होता है, परंतु यह उत्तर प्रदेश में प्रवाहित नहीं होती है।

अन्य नदियां: हिण्डन नदी, यमुना की सहायक नदी है। यह सहारनपुर जिले में ऊपरी शिवालिक से निकलती है। यह गंगा और यमुना के बीच लगभग 400 किमीतक बहती है। कर्मनाशा नदी गंगा की . णी से निकलती है। यह उत्तर प्रदेश के सहायक नदी है। यह बिहार के कैमूर जिले में स्थित कैमूर श्रे मिर्जापुर जिले के मैदानी भागों से बहते हुए आगे बिहार एवं उत्तर प्रदेश की सीमा का निर्धारण करती है। चौसा के निकट कर्मनाशा नदी गंगा में मिल जाती है। मगई नदी, गंगा की सहायक नदी है। कुकरैल नदी, गोमती की सहायक नदी है।

12:उत्तर प्रदेश में प्रौद्योगिकी से संबंधित मुद्दे, प्रसार तथा प्रयत्न

उत्तर प्रदेश देश की सबसे बड़ी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाला राज्य है। प्रदेश सरकार का लक्ष्य 2027 तक 1 ट्रिलियन इकोनामी बनने का है इस निमित्त विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रहेगी। इस दिशा में कदम बढ़ाते हुए सरकार ने कई क्षेत्रों में प्रौद्योगिकीय विकास किये हैं। आइये विभिन्न क्षेत्रों में हुए इस विकास पर नजर डालते हैं।

कृषि प्रौद्योगिकी:

- उत्तर प्रदेश कृषि में अत्यंत अग्रणी राज्य है। कृषि उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। हालांकि परिवर्तित हो रहे जलवायु तथा फसल चक्र, कृषि को व्यापक रूप से प्रभावित कर रहा है। इस स्थिति में कृषि में निरंतर शोध की आवश्यकता है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान इत्यादि जैसे कई संस्थानों का निर्माण उत्तर प्रदेश में कृषिगत शोध के लिए किया गया है।
- जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिए उन्नत बीजों तथा बेहतर सिंचाई प्रणाली की आवश्यकता है जो विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप से ही संभव है। जुलाई 1989 में कृषि विकास को प्रोत्साहित करने के लिए उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद की स्थापना की गई। प्रदेश में गन्ने के महत्व को समझते हुए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान की स्थापना 1952 में लखनऊ में की गई।
- इसके अतिरिक्त सरदार बल्लभ भाई कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय मेरठ, चंद्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, अयोध्या, इत्यादि कृषि शोध के महत्वपूर्ण संस्थान हैं।
- यूपी एग्रो इंडस्ट्रियल कारपोरेशन की स्थापना 29 मार्च 1967 को की गई जो कृषकों को रासायनिक उर्वरक कीटनाशक तथा उपकरण आदि उचित मूल्य पर प्रदान करता है।
- फल, साग सब्जी तथा फूलों के लिए उत्तक संवर्धन प्रयोगशाला अलीगंज लखनऊ में स्थापित की गई है।
- इसके अतिरिक्त भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केंद्र कृषि प्रौद्योगिकी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी:

- उत्तर प्रदेश में कैंसर, मधुमेह, एड्स जैसे घातक बीमारियों से ग्रस्त लोगों की संख्या कम नही है। इस स्थिति में चिकित्सा में तकनीकी की आवश्यकता बहुत अधिक बढ़ जाती है। केंद्र सरकार के

सहयोग से लखनऊ, प्रयागराज, झांसी तथा गोरखपुर, इत्यादि स्थानों पर मेडिकल कॉलेजों की स्थापना की गई है। इसके साथ ही मेडिकल कॉलेज में कैंसर संस्थानों की स्थापना की जा रही है।

- केंद्र तथा राज्य सरकार के सहयोग से प्रदेश में राष्ट्रीय क्षय नियंत्रण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। यह 1968 से चल रहा है तथा 2005 तक पूरे प्रदेश को कवर कर लिया गया है।
- प्रत्येक एक लाख की जनसंख्या पर माइक्रोस्कोपिक सेंटर तथा प्रत्येक पांच लाख की जनसंख्या पर एक टीबी सेंटर स्थापित किया गया है।.
- विश्व बैंक के सहयोग से वर्ष 2000 से उत्तर प्रदेश हेल्थ सिस्टम डेवलपमेंट पर योजना चलाई जा रही है। यह परियोजना चिकित्सा इकाइयों के जीर्णोद्धार के लिए आरंभ की गई है।
- राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन की पहल पर कानपुर में प्रदेश के पहले एड्स चिकित्सालय की स्थापना की गई है। इसके अतिरिक्त संक्रामक रोग चिकित्सालय तथा मानसिक चिकित्सालय)वाराणसी तथा बरेलीमें स्थापित है। (

सूचना प्रौद्योगिकी :

- वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश देश के अग्रणी इलेक्ट्रॉनिक्स राज्यों में है। 1974 में प्रदेश में राज्य सूचना प्रौद्योगिकी विभाग की स्थापना की गई थी जिसे 1998 में सूचना प्रौद्योगिकी तथा इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग में परिवर्तित कर दिया गया।
- इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण नीति 2018, उत्तर प्रदेश को इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग हब बनाने के उद्देश्य से लाया गया है। यह 2022 तक इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम डिजाइन एवं मैन्युफैक्चरिंग में लगभग 20 हजार रुपए का निवेश कराकर तीन लाख रोजगार सृजित करने का लक्ष्य रखता है।
- इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए उत्तर प्रदेश सूचना प्रौद्योगिकी एवं इलेक्ट्रॉनिक विभाग के अंतर्गत यूपी इलेक्ट्रॉनिक्स कारपोरेशन लिमिटेड तथा यूपीडेस्को का निर्माण किया गया है। 1977 में की गई थी। यह योजनाओं एवं कार्यक्रमों के को तकनीकी विकल्प देने तथा डाटा प्रबंधन में सहायता करता है। वही इलेक्ट्रॉनिक्स कारपोरेशन लिमिटेड राज्य के स्मार्ट स्टेट के लक्ष्य की पूर्ति के लिए यह गवर्नेस ईकॉमर्स-, शिक्षा, सॉफ्टवेयर विकास, ई बिजनेस इत्यादि क्षेत्रों में योगदान देता है।
- इन प्रयासों के अतिरिक्त सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क -ई (नोएडा कानपुर तथा लखनऊ प्रयागराज) प्रोक्योरमेंट, नेशनल ईगवर्नेस प्रोग्राम सेंटर फॉर गवर्नेस उत्तर प्रदेश-, स्वान परियोजना, स्टेट डाटा सेंटर, ईक्ट परियोजना इत्यादि चलाई जा रही हैं।डिस्ट्रि-
- यह न सिर्फ आर्थिक बल्कि सामाजिक विकास का भी वाहक बन रहा है ध्यातव्य है कि वीमेन पावर लाइन 1090 तथा डायल 112 यूपी डेस्को के माध्यम से चलाई जा रही हैं जो अपराध को कम करने में सहायक हैं।

अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी:

- उत्तर प्रदेश के कृषि भूमिगत जल स्तर इत्यादि की को हल करने के लिए रिमोट सेन्सिंग तकनीक की क्षमताओं को आँकते हुए, उत्तर प्रदेश सरकार ने लखनऊ में एक 'रिमोट सेन्सिंग एप्लीकेशन केंद्र'

स्थापित करने की ओर कदम बढ़ाया है। इससे पूर्व सन 1982 में तत्कालीन सरकार द्वारा रिमोट सेन्सिंग एप्लीकेशन केंद्र एक स्वायत्त संस्था के रूप में स्थापित किया गया था। इसकी स्थापना 1960 के सोसाइटी एक्ट के अधीन की गई थी। इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का वाहय स्रोतों से समुचित प्रबंधन करना था। साथ ही यह भी सुनिश्चित करना था कि उभरती हुई नई तकनीक के माध्यम से हम कैसे अपने प्राकृतिक संसाध नों को उपग्रहों द्वारा रिमोट सेन्सिंग एप्लीकेशन से भली प्रकार समायोजित कर सकते हैं। इस केंद्र की स्थापना का उद्देश्य यह भी था कि रिमोट सेन्सिंग की उच्च तकनीक को उपभोक्ताओं के साथ कैसे एकरूप किया जाए।

- इसके अतिरिक्त लखनऊ स्थित परिषद के ऑडिटोरियम में सेटेलाइट बेस्ट कंप्यूटर इंटरएक्टिव सेंटर की स्थापना की गई है यह विज्ञान है के विभिन्न विषयों पर व्याख्यान के माध्यम से शिक्षण कार्य किया जाता है।
- प्रदेश में खगोलीय के प्रति लोगों की जागरूकता को उत्पन्न करने के लिए इंदिरा गांधी नक्षत्र शाला लखनऊ, वीर बहादुर सिंह नक्षत्र शाला गोरखपुर, आर्यभट्ट नक्षत्र शाला रामपुर, मोबाइल नक्षत्र शाला, जवाहर नक्षत्र शाला प्रयागराज इत्यादि को स्थापित किया गया है।

जैव प्रौद्योगिकी:

- उत्तर प्रदेश जैविक रूप से एक विविध प्रदेश है यह सबसे बड़ी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है इसके अतिरिक्त इसकी कृषि विविधता भी बहुत अधिक है कृषि उद्योग खाद्यान्न व पोषक तत्व प्रबंधन चिकित्सा एवं स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों के लिए जैव प्रौद्योगिकी के लिए 1998-99 में प्रदेश में जैव प्रौद्योगिकी की विशेष पहल आरंभ की गई।
- 2004 के जैव प्रौद्योगिकी नीति प्रदेश को जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र में प्रमुख स्थान दिलाने तथा औद्योगिक निवेश को आकर्षित करने व जैव प्रौद्योगिकी शोध एवं विकास को प्रोत्साहित करने के लिए घोषित की गई है। इस नीति के अंतर्गत मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में एक 33 सदस्य जैव प्रौद्योगिकी विकास बोर्ड का भी गठन किया गया है।
- इसके अतिरिक्त लखनऊ में जैव प्रौद्योगिकी पार्क, जैव उर्वरक परियोजना बायोटेक नेटवर्किंग फैसिलिटी केंद्र पर नील हरित शैवाल जैव उर्वरक के उत्पादन, क्लोनिंग गार्डन परियोजना को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- ध्यातव्य है कि लखनऊ को 2002 में भारत का जैव प्रौद्योगिकी नगर घोषित किया गया है।

प्रौद्योगिकी शिक्षा:

- उत्तर प्रदेश एक बड़ा श्रम आपूर्तिकर्ता प्रदेश है परंतु यहां कौशल विकास एक बड़ी रूप में सामने है। ध्यातव्य की कोरोना काल के दौरान उत्तर प्रदेश वापस आए 30 लाख श्रमिकों में से 50% से अधिक श्रमिक थे। हालांकि प्राविधिक शिक्षा तथा कौशल विकास के लिए सरकारों द्वारा कई प्रयास किए जा रहे हैं जो निम्नवत वर्णित है।

- केंद्र सरकार के सहयोग से प्रधानमंत्री कौशल विकास तथा विकास योजनाओं का संचलन किया जा रहा है।
- राज्य सरकार के अंतर्गत लखनऊ गोरखपुर तथा कानपुर में 3 विश्वविद्यालय 16 इंजीनियरिंग कॉलेज संचालित हो रहे हैं।
- प्रदेश में तकनीकी शिक्षा के विकास के लिए लखनऊ में अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय की स्थापना 2000 में की गई है।
- इसके अतिरिक्त आईआईटी कानपुर, ट्रिपल आईटी प्रयागराज तथा आईआईटी बीएचयू प्रदेश में तकनीकी शिक्षा को मजबूत करते हैं

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद:

- यह 1975 में स्थापित एक स्वायत्तशासी संस्थान है वह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत गठित किया गया है। यह उत्तर प्रदेश में वैज्ञानिक परिदृश्य को बढ़ाने के लिए कई योजनाएं चलाता है जिसका वर्णन निम्नवत है-
- शोध प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों वथा रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान जीव विज्ञान, आयुर्विज्ञान कृषि विज्ञान इत्यादि में शोध का कार्य किया जाता है। 35 वर्ष तक के युवा वैज्ञानिकों को शोध अपराहन देने के लिए 2007-08 से यंग साइंटिस्ट स्कीम आरंभ की गई है।
- परिषद प्रौद्योगिकी विकास उन्नयन तथा हस्तांतरण का कार्य करता है इसके अंतर्गत यह ऐसी परियोजनाओं का विकास करता है जो जनमानस के लिए आवश्यक हो वथा एल्युमिनियम लंड मिश्रित धातु का विकास, इंडिया मार्क 2 हैंडपंप के नए मॉडल प्राइस प्लस का आधुनिकीकरण इत्यादि इस परियोजना के अंतर्गत किए गए हैं।
- बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के लिए 1993 से राष्ट्रीय बाल कांग्रेस का आयोजन किया जा रहा है यह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद एवं राज्य के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के संयुक्त तत्वाधान में होता है।

आगे की राह: उत्तर प्रदेश में वैज्ञानिकता के विकास के लिए कई सारे प्रयत्न किए जा रहे हैं परंतु अभी भी आम जनमानस से विज्ञान को संबद्धता, इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग के लिए सेमीकंडक्टर के निर्माण, कृषि प्रौद्योगिकी का समुचित प्रयोग व जनता तक इसकी पहुंच जैसे कई समस्याएं हैं जिन्हें हल करना अत्यंत आवश्यक है तब उत्तर प्रदेश एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में आगे बढ़ सकेगा।

13: उत्तर प्रदेश की जलवायु

उत्तर प्रदेश की पूरी जलवायु गर्म है। तराई क्षेत्र में इसमें नमी होती है तथा दक्षिण के पठारी क्षेत्र में यह शुष्क होती है। उत्तर प्रदेश में दो प्रकार के जलवायु प्रदेश पाए जाते हैंआर्द्र एवं उष्ण क्षेत्र तथा साधारण - तराई क्षेत्र एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश। - एवं उष्ण क्षेत्र में दो उपविभाग पाये जाते हैंआर्द्र एवं उष्ण क्षेत्र। आर्द्र साधारण आर्द्र एवं उष्ण क्षेत्र में तीन उपमध्यवर्ती मैदानी क्षेत्र -विभाग हैं-, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र तथा बुंदेलखंड का पहाड़ी) शुष्क शीत मानसूनी जलवायु पठारी क्षेत्र। कोपेन के अनुसार प्रदेश में-cwg) पायी जाती है। उ0प्र0 की जलवायु उष्ण कटिबंधीय एवं मानसूनी है। यहाँ वर्ष में तीन ऋतुएँ घटित होती है-

1. **ग्रीष्म ऋतु**
2. **वर्षा ऋतु**
3. **शीत ऋतु**

1- ग्रीष्म ऋतु- सूर्य के कर्क रेखा की ओर बढ़ने के साथ ही प्रदेश का तापमान बढ़ने लगता है तथा जून महीने में तापमान अपने उच्चतम शिखर पर होता है। ग्रीष्म ऋतु में प्रदेश का औसत अधिकतम तापमान 36-39 डिग्री सेंटीग्रेड तक तथा औसत न्यूनतम तापमान 21-23 डिग्री सेंटीग्रेड तक रहता है। इस ऋतु में प्रदेश में अत्यंत गर्म एवं शुष्क हवाएँ (लू), तूफान तथा धूल भरी आंधियाँ चलती हैं। इस ऋतु में सर्वाधिक गर्मी आगरा तथा झाँसी में और न्यूनतम गर्मी बरेली में पड़ती है।

2-वर्षा ऋतु- बंगाल की खाड़ी से उठने वाला मानसून जून के तीसरे या चौथे सप्ताह में प्रदेश के पूर्वी तथा दक्षिण पूर्वी सिरे से प्रवेश करता है और आगे बढ़ता है। इस मानसून का कुछ भाग वर्षा करते हुए सीधे पश्चिम में निकल जाता है और कुछ भाग उत्तर की ओर बढ़ता है और हिमालय से टकराकर पुनः वापस होता है। इस वापस होते मानसून से प्रदेश के तराई इलाकों में खूब वर्षा होती है। इस मानसून में कुछ वर्षा प्रदेश के पहाड़ी तथा पठारी क्षेत्रें में भी होती है। गोरखपुर क्षेत्र में प्रदेश की सर्वाधिक वर्षा तथा मथुरा में सबसे कम वर्षा होती है। प्रदेश की सम्पूर्ण वर्षा का लगभग 83 सेमी-वर्षा इसी ऋतु में दक्षिण - की सितम्बर में हो जाती है। प्रदेश में पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ने पर वर्षा-पश्चिमी मानसून से जून मात्रा में कमी आती जाती है। प्रदेश में मानसून मैदानी क्षेत्र में पूर्व से प्रवेश करता है और उसी मार्ग से लौटता भी है, अतः पूर्वी भाग में वर्षा का प्रारम्भ पहले होता है और वर्षा की अवधि भी लम्बी होती है। यही कारण है कि प्रदेश में सर्वाधिक वर्षा पूर्वी मैदान के तराई क्षेत्र में)150 सेमीहोती है और (तक -) पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में सबसे कम वर्षा84 सेमीहोती है। (तक -

3-शीत ऋतु- प्रदेश में नवम्बर महीने से शीत ऋतु शुरू होती है और जनवरी प्रदेश का सर्वाधिक ठण्डा महीना होता है। प्रदेश में शीत ऋतु में तापमान दक्षिण से उत्तर की ओर कम होता जाता है। शीतकाल

में भूमध्यसागरीय क्षेत्र से उत्पन्न होने वाले चक्रवातों के पाकिस्तान के रास्ते भारत में (पश्चिमी विक्षोभ) प्रवेश करने से पश्चिमी उत्तर प्रदेश में शीतकाल में वर्षा होती है। यह वर्षा रबी की फसल के लिए बहुत होती है। उपयोगी

उत्तर प्रदेश उपोष्णकटिबंधीय जलवायु का अनुभव करता है। राज्य में अधिकांश वर्षा मानसून के मौसम में होती है, जो जून से सितंबर तक रहता है। उत्तर प्रदेश में औसत वार्षिक वर्षा लगभग 1000 मिमी है। उत्तर प्रदेश में वर्षा पैटर्न असमान रूप से वितरित है, कुछ क्षेत्रें में अन्य की तुलना में अधिक वर्षा होती है। गोरखपुर आजमगढ़ और इलाहाबाद जिलों सहित राज्य के पूर्वी और मध्य भागों में पश्चिमी और उत्तरी क्षेत्र की तुलना में अधिक वर्षा होती है। सहारनपुर, मुजफ्फरनगर और मेरठ जिलों सहित राज्य के पश्चिमी भाग में तुलनात्मक रूप से कम वर्षा होती है। कुल मिलाकर, उत्तर प्रदेश में वर्षा पैटर्न विभिन्न कारकों जैसे मानसूनी हवाओं, स्थलाकृति और जल निकायों से निकटता से प्रभावित होता है। राज्य में गंगा, यमुना और घाघरा सहित कई नदियाँ और उनकी सहायक नदियाँ हैं, जो राज्य के विभिन्न क्षेत्रें में वर्षा के वितरण को भी प्रभावित करती हैं।

Lucknow IAS Academy

LiA

Join our telegram channel